नागेश्वर ज्योतिर्लिंग महत्व व इतिहास

भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से 10वां ज्योतिर्लिंग नागेश्वर ज्योतिर्लिंग है। यह ज्योतिर्लिंग भारत के गुजरात राज्य में है, और गुजरात राज्य के द्वारिकापुरी से 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। भारत के द्वारिकापुरी में नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के परिसर में भगवान शिव की एक बड़ी ही मनमोहक ध्यान मुद्रा में विशाल प्रतिमा बनाई गई है जिसकी वजह से मंदिर 3 किलोमीटर की दूरी से ही दिखाई देने लगता है। भगवान शिव जी की यह मूर्ति 80 फीट ऊंची तथा इसकी चौड़ाई 25 फीट है। तथा इसका मुख्य द्वार अत्यंत साधारण और सुंदर है।

ऐसा माना जाता है की नागेश्वर अर्थात की नागों का ईश्वर नागों का देवता वासुकी जी भगवान शिव जी के गले में कुंडली मार कर बैठे रहते है । इस मन्दिर मैं स्थापित ज्योतिर्लिंग का दर्शन करने वालों के लिए भगवान शिव जी की बहुत महिमा है। कहा जाता है कि इस मंदिर में विष से संबंधित सभी रोग से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। भगवान शिवजी के 12 ज्योतिर्लिंगों में स्थापित श्री विश्वनाथ का यह दसवां ज्योतिर्लिंग माना गया है।

भगवान शिव जी के इन मंदिरों को ज्योतिर्लिंग कहा जाता है, क्योंकि इन स्थानों पर भगवान शिव जी अपने भक्तों की श्रद्धा पूर्वक पूजन से प्रसन् होकर स्वयं उत्पन्न हुए थे। धार्मिक ग्रंथों के लेखों में कहा गया है कि इस पवित्र ज्योतिर्लिंग के श्रद्धा पूर्वक दर्शन करने से पापों से मुक्ति प्राप्त होती है। हिंदुओं का यह प्राचीन एवं प्रमुख मंदिर केवल भगवान शिव जी को समर्पित है। जिसमें शिवजी की श्रद्धा पूर्वक पूजा आराधना नागेश्वर के रूप में की जाती है। इस ज्योतिर्लिंग को रूद्र संहिता में दारकावने नागेश के नाम से भी जाना जाता है।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग की धार्मिक मान्यताएं

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान शिव को नागों के देवता के रूप में जाना जाता है। नागेश्वर का संपूर्ण अर्थ नागों का ईश्वर है। पौराणिक कथाओं में इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन की कथा एक बड़ी विशाल महिमा बताई गई है। इस ज्योतिर्लिंग की भी विभिन्न रोचक कहानियां है जिसे सभी श्रद्धा पूर्वक सुनते हैं। कहा जाता है कि महात्माओं की कथा को श्रद्धापूर्वक सुनने से जीवन में किए गए सभी पापों से मुक्ति मिलती है। यह मंदिर सुबह 5.00 बजे आरती के साथ खुलता है, किंतु भक्तों के लिए यह मंदिर 6.00 बजे खुलता है। मंदिर के पुजारियों द्वारा कई विधियों द्वारा शिवजी की श्रद्धा पूर्वक पूजा तथा अभिषेक किए जाते हैं। भगवान शिव जी के द्वार पर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए शाम 4.00 बजे श्रृंगार दर्शन होते हैं, तत्पश्चात गर्भ गृह में प्रवेश करने पर प्रतिबंध होता है। यहां पर पुजारियों द्वारा भगवान शिव जी की शाम की आरती सांय 7.00 बजे की जाती है तथा भक्तों के दर्शन का समय रात्रि 9.00 बजे समाप्त हो जाता है। भगवान शिव जी के त्यौहार और विषेश शुभ अवसर पर यह मंदिर अधिक समय तक खुला रहता है।

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का निर्माण कार्य

भगवान शिव जी के इस दसवीं ज्योतिर्लिंग का निर्माण कार्य अत्यंत अद्भुत तथा सौंदर्यकरण विधि से करवाया गया है। नागेश्वर मंदिर के मुख्य गर्भ गृह के निचले स्तर पर भगवान शिव जी के इस ज्योतिर्लिंग को स्थापित किया गया है। इस ज्योतिर्लिंग के ऊपर भगवान शिव जी का एक चांदी का बड़ा नाग स्थापित किया गया है। इतना ही नहीं इस अद्भुत ज्योतिर्लिंग के पीछे ही माता पार्वती की प्रतिमा की स्थापना भी की गई है। इस ज्योतिर्लिंग का मंदिर अत्यंत अद्भुत सौंदर्य पूर्वक तरीके से बनाया गया है। कहा जाता है, कि जिन श्रद्धालुओं को ज्योतिर्लिंग का अभिषेक करना है वहां के पुजारियों से अनुरोध करके सफेद धोती पहनकर अभिषेक करवाते हैं।

देश में कहां-कहां हैं शिव की विशाल प्रतिमाएं

श्रावण के महीने अगर आप घर बैठे ही भगवान शिव जी के दर्शन करना चाहते हैं तो यहां अवश्य पढ़ें भारतभर में स्थापित भोलेनाथ के 11 विशालकाय प्रतिमाओं के बारे में खास जानकारी।

शिव प्रतिमा (श्री नाथ द्वारा) ऊंचाई- 351 फुट

राजस्थान में उदयपुर से करीब 50 किलोमीटर की दूरी पर 351 फुट ऊंची बन रही यह प्रतिमा श्री नाथ द्वारा के गणेश टेकरी में स्थित है। इस शिव प्रतिमा के दर्शन आप 20 किमी की दूरी से ही कर सकते हैं।

शिव मूर्ति, मुरुदेश्वरा (कर्नाटक, भारत) ऊंचाई लगभग 123 फुट

विश्व की दूसरे नंबर की शिव मूर्ति अरब सागर के तट पर स्थित है। इस संपूर्ण क्षेत्र को मुरुदेश्वरा कहते हैं। बैठक मुद्रा में मुरुदेश्वर मंदिर के बाहर स्थापित शिव की इस मूर्ति की ऊंचाई 37 मीटर अर्थात लगभग 123 फुट है। मुरुदेश्वर दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में उत्तर कन्नड़ जिले के भटकल तहसील में अरब सागर के तट पर स्थित एक कस्बा है। कंदुका पहाड़ी पर तीन ओर से पानी से घिरा यह मुरुदेश्वर मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। यहां भगवान शिव का आत्मलिंग स्थापित है जिसका संबंध रामायण काल से है। मान्यता के अनुसार अमरता पाने हेतु रावण जब शिवजी को प्रसन्न करके उनका आत्मलिंग अपने साथ लंका ले जा रहा था तब रास्ते में इस स्थान पर आत्मलिंग को धरती पर रख दिए जाने के कारण स्थापित हो गया था।

हर की पौड़ी, हरिद्वार (उत्तराखंड, भारत) ऊंचाई लगभग 100 फुट

यह मूर्ति हरिद्वार स्थित गंगा नदी के तट पर हर की पौड़ी के पास स्थापित की गई है। यह मूर्ति खड़ी मुद्रा में है जबकि हरिद्वार के पास ऋषिकेश की मूर्ति बैठक मुद्रा में है। बताया जाता है कि बाढ़ के कारण ऋषिकेश की मूर्ति पानी में बह गई। हर की पौड़ी भारत के सबसे पवित्र घाटों में एक है। कहा जाता है कि यह घाट विक्रमादित्य ने अपने भाई भतृहरि की याद में बनवाया था। यहीं पर हर शाम हजारों दीपकों के साथ गंगा की आरती की जाती है। हर की पौड़ी के पीछे के बलवा पर्वत की चोटी पर मनसादेवी का मंदिर बना है। मंदिर तक जाने के लिए पैदल रास्ता है। मंदिर जाने के लिए रोप-वे भी है।

शिवगिरि महादेव, बीजापुर शिवपुर (कर्नाटक) ऊंचाई लगभग 85 फुट

शिवगिरि महादेव की यह विशालकाय मूर्ति लगभग 85 फुट ऊंची है, जो बीजापुर जिले के शिवपुर स्थान पर सन् 2006 में स्थापित की गई थी। शिव की यह बैठी हुई प्रतिमा 2011 में स्थापित की गई है।

कैलाशनाथ महादेव, सांगा, जिला भक्तापुर (नेपाल) ऊंचाई लगभग 143 फुट

विश्व में शिव की सबसे ऊंची मूर्ति नेपाल के चित्तपोल सांगा जिला भक्तापुर में स्थित है। खड़ी मुद्रा में इस मूर्ति का निर्माण कार्य 2004 में शुरू हुआ था और 2010 में यह मूर्ति बनकर तैयार हुई और 21 जून 2011 को इस मूर्ति का अनावरण किया गया। इस मूर्ति को धनराज जैन परिवार ने लगभग 11 करोड़ की लागत से बनवाया था। श्री मनुराम वर्मा और नरेश कुमार वर्मा मूर्तिकार थे। इस मंदिर की विशालता को देखना बहुत अद्भुत है।

नागेश्वर महादेव दारुकावन (गुजरात) ऊंचाई 82 फुट

12 ज्योतिर्लिंगों में से गुजरात में 2 ज्योतिर्लिंग हैं- एक सोमनाथ महादेव और दूसरे नागेश्वर महादेव। यह मंदिर पहले बहुत छोटा था लेकिन बाद में इस मंदिर को भव्य रूप दिया टी सीरिज के निर्माता गुलशन कुमार ने। मंदिर प्रांगण के बाहर भगवान शिव की विशालकाय मूर्ति भूतल से 82 फुट ऊंची और चौड़ाई में 25 फुट चौड़ी है। इतनी ही ऊंचाई लिए एक मूर्ति मध्यप्रदेश के ओंकारेश्वर में भी स्थापित है। ओंकारेश्वर में 12 ज्योतिर्लिंगों में से 1 लिंग है, यहीं पर ममलेश्वर महादेव का मंदिर भी है।

कचनार महादेव, जबलपुर (मध्यप्रदेश) ऊंचाई 76 फुट

मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले के कचनार शहर में शिव मंदिर के पास स्थापित इस मूर्ति की ऊंचाई 76 फुट है। यहीं पर 12 ही ज्योतिर्लिंगों की प्रतिकृतियां बनाई गई हैं। जबलपुर भेड़ाघाट वॉटर फाल, 64 योगिनी मंदिर और कान्हा नेशनल पार्क के लिए प्रसिद्ध है।

कैम्प फोर्ट शिव मूर्ति, एयरपोर्ट रोड, बेंगलुरु (कर्नाटक) ऊंचाई 65 फुट

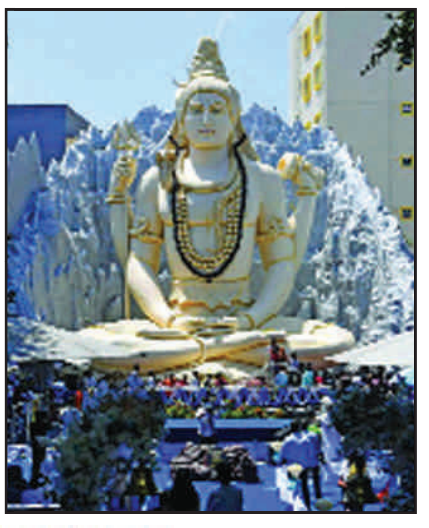

65 फुट ऊंची इस मूर्ति की स्थापना 1995 में हुई थी। इस मूर्ति में भगवान शिव पद्मासन की अवस्था में विराजमान हैं। इस मूर्ति की पृष्ठभूमि में कैलाश पर्वत, भगवान शिव का निवास स्थल तथा प्रवाहित हो रही गंगा नदी है।

बेलीश्वर महादेव, भंजनगर, जिला गंजम (ओडिशा) ऊंचाई 61 फुट

भारतीय राज्य ओडिशा के भंजनगर में स्थित चंद्रशेखर महादेव मंदिर के पास स्थापित इस मूर्ति की ऊंचाई लगभग 61 फुट है। 6 मार्च 2013 को इस मूर्ति का अनावरण किया गया था।

नामची शिव प्रतिमा (सिक्किम) ऊंचाई- लगभग 108 फुट

नामची शहर में पहाड़ी पर विराजित शिव प्रतिमा चारधाम यानी बद्रीनाथ, रामेश्वरम, द्वारका और पुरी के मंदिरों के प्रतिरूप में रूप में देखने को मिलती है। यहां बनी शिव की मूर्ति 108 फुट ऊंची है। इसे सिद्धेश्वर धाम तथा किरातेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। यह सिक्किम के गंगटोक से 92 किलोमीटर की दूरी पर है तथा इस मंदिर में 12 ज्योतिर्लिंगों को भी दर्शाया गया है।

मंगल महादेव, हरियाणा ऊंचाई- 101 फुट

हरियाणा में मंगल महादेव की विशाल प्रतिमा है। यह दिल्ली से जिसकी ऊंचाई करीब 101 फुट है। शिवरात्रि के साथ ही आम दिनों में भी यहां भक्तों की उतनी ही भीड़ देखने को मिलती है।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय
दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण सोमवार 24 अगस्त 2026 वर्ष-9,अंक-202 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पहला कॉलम

चुनावी राज्यों में युवाओं पर भाजपा का फोकस, सदस्यता विस्तार और 'सेवा संकल्प अभियान' को मिलेगी रफ्तार

नई दिल्ली, 23 अगस्त (आईएएनएस)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आगामी विधानसभा चुनावों से पहले संगठन विस्तार और जनसंपर्क अभियान को तेज करने की रणनीति बनाई है।

पार्टी ने युवाओं को जोड़ने और सदस्यता अभियान को व्यापक बनाने पर विशेष जोर देने का फैसला किया है। पार्टी की बैठक में विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए सदस्यता बढ़ाने का रोडमैप तैयार करने पर चर्चा हुई। इसमें खास तौर पर युवाओं की भागीदारी बढ़ाने और उन्हें संगठन से जोड़ने की योजना पर मंथन किया गया। बैठक में तय किया गया कि आने वाले दिनों में सेवा संकल्प अभियान के तहत होने वाले कार्यक्रमों और आयोजनों की योजना बनाने तथा उनके समन्वय के लिए छोटी-छोटी टीमें गठित की जाएंगी। सूत्रों के मुताबिक, पार्टी विभिन्न क्षेत्रों में कार्यक्रमों की निगरानी और समन्वय के लिए कुछ राष्ट्रीय महासचिवों को अलग-अलग जोन का प्रभारी भी बना सकती है। भाजपा चुनावी राज्यों में विशेष रूप से आक्रामक प्रचार अभियान चलाने की तैयारी में है। इसके तहत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के पिछले 12 वर्षों की उपलब्धियों और जनकल्याणकारी योजनाओं को व्यापक स्तर पर जनता तक पहुंचाया जाएगा।

बैठक में पार्टी द्वारा वर्तमान में चलाए जा रहे विभिन्न संगठनात्मक और जनसंपर्क कार्यक्रमों की समीक्षा भी की गई।

साथ ही इन कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने और उनकी पहुंच बढ़ाने पर चर्चा

हुई। भाजपा की यह रणनीति आगामी विधानसभा चुनावों से पहले बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करने, सदस्यता आधार का विस्तार करने और जनता के बीच अपनी पहुंच को और सशक्त बनाने की व्यापक संगठनात्मक योजना का हिस्सा मानी जा रही है।

बेंगलुरु-रांची फ्लाइट में यात्री की बिगड़ी तबीयत, घंटो रुकी रही उड़ान

पर्याप्त ऑक्सीजन बोतल उपलब्ध कराने में लगा समय, यात्रियों को करना पड़ा इंतजार

रांची।

बेंगलुरु से रांची आ रही एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान में रविवार सुबह एक यात्री की अचानक तबीयत बिगड़ गई। यात्री को सांस लेने में परेशानी होने पर चालक दल ने विमान में उपलब्ध ऑक्सीजन की मदद से उसे राहत पहुंचाई। यात्री की स्थिति स्थिर रहने पर विमान ने अपनी यात्रा जारी रखी और सुबह 8.55 बजे रांची के बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पर उतरा। एयरपोर्ट पर यात्री की स्वास्थ्य जांच की गई। स्थिति सामान्य और स्थिर पाए जाने के बाद उसे घर जाने दिया गया। एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान संख्या आईएक्स-1239 ने बेंगलुरु से सुबह 6.35 बजे रांची के लिए उड़ान भरी थी। उड़ान के कुछ ही मिनट बाद एक यात्री ने सांस लेने में परेशानी की शिकायत की। स्थिति को देखते हुए चालक दल ने तत्काल विमान में उपलब्ध ऑक्सीजन की व्यवस्था की। इसके बाद यात्री की हालत स्थिर रही और विमान निर्धारित मार्ग पर रांची पहुंचा। ऑक्सीजन बोतलों की व्यवस्था में लगा समय यात्री को ऑक्सीजन दिए जाने के बाद विमान के अगले परिचालन के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन बोतलों की उपलब्धता सुनिश्चित करना जरूरी था। रांची से बेंगलुरु जाने वाली एयर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान संख्या आईएक्स-1244 को सुबह 9.35 बजे रवाना होना था, लेकिन आवश्यक ऑक्सीजन बोतलों की व्यवस्था नहीं होने के कारण उड़ान समय पर रवाना नहीं हो सकी। विमानन कंपनी ने दिल्ली से आने वाली दूसरी उड़ान के जरिए ऑक्सीजन बोतलें मंगाईं। आवश्यक व्यवस्था पूरी होने के बाद उड़ान दोपहर 1.51 बजे रांची से बेंगलुरु के लिए रवाना हुई। इस तरह निर्धारित समय की तुलना में विमान 4 घंटे 16 मिनट की देरी से उड़ सका। यात्रियों को एयरपोर्ट पर करना पड़ा इंतजार उड़ान में देरी के कारण बेंगलुरु जाने वाले यात्रियों को रांची एयरपोर्ट पर कई घंटे इंतजार करना पड़ा। जिन यात्रियों को बेंगलुरु से आगे की यात्रा के लिए दूसरी उड़ान पकड़नी थी, उनकी कनेक्टिंग फ्लाइट प्रभावित होने की आशंका भी बनी रही। इस संबंध में मीडिया को बिरसा मुंडा एयरपोर्ट के निदेशक विनोद कुमार ने बताया कि बेंगलुरु से आने वाली उड़ान में एक यात्री को सांस लेने में परेशानी हुई थी।

कोलकाता में भाजपा के दो गुट भिड़े, दावत के आयोजन को लेकर हुई मारपीट

आनंदपुर खेल मैदान में आमने-सामने आए पार्टी कार्यकर्ता, एक के सिर में चोट
दोनों गुटों ने एक-दूसरे पर लगाए गंभीर आरोप

कोलकाता ।

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में भारतीय जनता पार्टी के दो गुटों के बीच आपसी विवाद हिंसक झड़प में बदल गया। दक्षिण-पूर्वी इलाके आनंदपुर में रविवार सुबह दावत के आयोजन को लेकर पार्टी के कार्यकर्ता आमने-सामने आ गए। दोनों गुटों के बीच हुई कहासुनी के बाद मारपीट की स्थिति बन गई, जिसमें एक भाजपा कार्यकर्ता घायल हो गया। घायल के सिर में चोट लगने की जानकारी सामने आई है। पुलिस के अनुसार, यह घटना आनंदपुर खेल मैदान में हुई। झड़प के बाद दोनों गुट थाने पहुंच गए और एक-दूसरे के खिलाफ आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। स्थानीय भाजपा नेता अरुण बिस्वाल ने आरोप लगाया कि खेल मैदान में आयोजित दावत के लिए पार्टी नेतृत्व से कोई अनुमति नहीं ली गई थी। उन्होंने आरोप लगाया कि दावत के आयोजन के लिए स्थानीय मछली और मटन व्यापारियों से जबरन पैसे वसूले गए। अरुण बिस्वाल ने यह भी दावा किया कि आयोजन के पीछे पार्टी में बाद में शामिल हुए कुछ लोग सक्रिय थे। उनके अनुसार, पार्टी की सहमति के बिना इस तरह का आयोजन किए जाने पर आपत्ति जताई गई थी। वहीं, दूसरे गुट ने इन आरोपों को खारिज करते हुए उल्टा अरुण बिस्वाल और उनके समर्थकों पर हमला करने का आरोप लगाया है। दूसरे पक्ष का कहना है कि दावत के दौरान उन पर हमला किया गया और झड़प की शुरुआत दूसरे गुट की ओर से की गई। झड़प के बाद दोनों गुट अपने समर्थकों के साथ पुलिस स्टेशन पहुंचे। वहां भी दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया और अपनी-अपनी शिकायत दर्ज कराने का प्रयास किया।

जयशंकर ने मिस्र के विदेश मंत्री से फोन पर की खाड़ी के हालात पर बात

नई दिल्ली।

भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मिस्र के विदेश मंत्री बद्र अब्देलअत्ती से फोन पर बातचीत की। जयशंकर ने बताया कि दोनों नेताओं के बीच पश्चिम एशिया और खाड़ी क्षेत्र की मौजूदा स्थिति पर चर्चा हुई। इस बातचीत को लेकर उन्होंने सराहना भी की। दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच यह बातचीत ऐसे समय हुई है, जब पश्चिम एशिया में तनाव और क्षेत्रीय सुरक्षा से जुड़े घटनाक्रम लगातार चर्चा में हैं। मिस्र भी क्षेत्रीय तनाव कम करने और कूटनीतिक प्रयासों को आगे बढ़ाने पर जोर देता रहा है। हाल में मिस्र ने क्षेत्रीय संकटों के समाधान के लिए संवाद और कूटनीति को प्राथमिकता देने की बात कही है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भारत और मिस्र के बीच पश्चिम एशिया समेत कई क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर नियमित संपर्क रहा है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक जयशंकर और अब्देलअत्ती के बीच पहले भी फोन पर बातचीत हो चुकी है।

रक्षा के क्षेत्र में अब किसी पर निर्भर नहीं रहेगा भारत

- राजनाथ ने यह बात पांच रक्षा परियोजनाओं का शिलान्यास करते हुए कही

कोलकाता।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता को लेकर बड़ा संदेश देते हुए कहा कि अब देश की सोच यह नहीं होनी चाहिए कि भारत को दुनिया से क्या खरीदना है, बल्कि यह होनी चाहिए कि दुनिया भारत से क्या खरीदना चाहती है। उन्होंने कहा कि रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता अब केवल नीति नहीं, बल्कि युद्धक्षेत्र की क्षमता बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है।

राजनाथ सिंह ने यह बात करीब 3,500 करोड़ रुपये की पांच रक्षा परियोजनाओं का शिलान्यास करते हुए कही। ये परियोजनाएं पश्चिम बंगाल में गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (जीआरएसई) और यंत्र इंडिया लिमिटेड की नई सुविधाओं से जुड़ी हैं। उन्होंने कहा कि स्वदेशी हथियार प्रणालियां देश की सुरक्षा के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं और ऑपरेशन सिंदूर के दौरान दुनिया ने भारत में विकसित हथियार प्रणालियों की क्षमता को देखा। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने जीआरएसई की क्षमताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत को ऐसा रक्षा औद्योगिक आधार तैयार करना होगा, जिसकी गुणवत्ता पर दुनिया भरोसा करे, कीमत प्रतिस्पर्धी हो और समय पर डिलीवरी के कारण ग्राहक दोबारा ऑर्डर दें। उन्होंने कहा कि जीआरएसई के पास तकनीकी विशेषज्ञता, कुशल कार्यबल और अब बढ़ी हुई उत्पादन क्षमता भी होगी। इसका पूरा इस्तेमाल घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार में किया जाना चाहिए। उन्होंने बताया कि जीआरएसई भारतीय नौसेना के

लिए युद्धपोत बनाने के साथ एक जर्मन कंपनी के लिए 12 मालवाहक जहाज भी तैयार कर रहा है। इसे मेक इन इंडिया और मेक फॉर द वर्ल्ड की नीति के अनुरूप बताते हुए उन्होंने कहा कि क्षमता बढ़ने के साथ भारतीय कंपनियों को घरेलू और वैश्विक बाजार में अधिक आक्रामक तरीके से प्रतिस्पर्धा करनी होगी। आत्मनिर्भरता युद्ध क्षमता का गुणक राजनाथ सिंह ने कहा कि रक्षा मंत्रालय, अनुसंधान प्रयोगशालाएं, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम और निजी क्षेत्र मिलकर भारतीय सेनाओं को स्वदेशी प्लेटफॉर्म से लैस करने के लिए लगातार काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश ने यह साबित कर दिया है कि रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता केवल एक सरकारी नीति नहीं है, बल्कि यह युद्ध के समय सैन्य क्षमता को कई गुना बढ़ाने वाला कारक है।

केरल के प्रसिद्ध गुरुवायूर मंदिर में एक ही दिन में हुए 437 विवाह, बना रिकॉर्ड

गुरुवायूर।

केरल के प्रसिद्ध गुरुवायूर श्रीकृष्ण मंदिर में रविवार को एक ही दिन में 437 विवाह हो रहे हैं जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। देवस्वोम अधिकारियों ने उन्होंने बताया कि मंदिर के इतिहास में एक दिन में होने वाले विवाहों की यह सबसे बड़ी संख्या है। गुरुवायूर देवस्वोम बोर्ड के अध्यक्ष ने कहा कि मंदिर में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में विवाह हो रहे हैं।

उन्होंने कहा कि गुरुवायूर में 437 विवाह हो रहे हैं। इसमें सबसे अहम गुरुवायूर की जनता का सहयोग है। नियमित श्रद्धालुओं के दर्शन पर कुछ प्रतिबंध लगाए गए हैं और लोगों ने विवाहों को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए पूरा सहयोग दिया है।

उन्होंने बताया कि देवस्वोम की ओर से विवाह समारोहों के लिए सभी जरूरी व्यवस्थाएं की गई हैं। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस विभाग के 100 से ज्यादा कर्मियों को तैनात किया है। किसी के बीमार होने की स्थिति में एंबुलेंस की व्यवस्था है और डॉक्टर भी तैनात हैं।

उन्होंने कहा कि विवाह समारोह सुबह चार बजकर 10 मिनट पर शुरू हुआ और शुरुआती दो घंटों में ही करीब 137 विवाह हुए।

2030 तक तेजस की कोई अहमियत ही ना रहे,पहले वादा किया अब कर रहे इनकार

- पूर्व एयर मार्शल कपूर ने की लड़ाकू विमान की डिलीवरी में हो रही देरी की आलोचना

नई दिल्ली।

एयर मार्शल नागेश कपूर (रिटायर्ड) ने हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) द्वारा एयर फोर्स को तेजस फाइटर जेट की डिलीवरी में हो रही देरी की आलोचना की। उन्होंने कहा कि ऐसा क्यों है कि जिस मशीन के बारे में हमें कई साल पहले कुछ खास क्षमताओं के साथ देने का वादा किया था, उसे अब हमें देने से इनकार किया जा रहा है? उन्होंने कहा कि ऐसा न हो कि 2030 तक तेजस लड़ाकू विमानों की कोई अहमियत ही ना रहे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक नागेश कपूर ने कहा कि हमें क्यों मुश्किलों का सामना करना पड़े, सिर्फ इसलिए क्योंकि किसी ने कहीं अपना वादा पूरा नहीं किया? एचएएल की तरफसे आईएएफको स्वदेशी एलसलए तेजस एमके1ए जेट की डिलीवरी में कई सालों की देरी हुई है।

इसकी मुख्य वजहें हैं- अमेरिकी कंपनी जीई की तरफ से एफ404-इन20 इंजन की सप्लाई में देरी, कॉम्प्लेक्स मिशन सॉफ्टवेयर का वैलिडेशन और एयर फोर्स की सख्त ऑपरेशनल जरूरतें। पूर्व वाइस चीफ ने कहा

जहां चीन 2030 तक 500 पांचवीं पीढ़ी के जे-20 फाइटर जेट तैनात करने की तैयारी में है, वहीं भारत अभी भी 4.5 पीढ़ी के तेजस एमके1ए के पहले स्क्वाड्रन की डिलीवरी पाने के लिए संघर्ष कर रहा है। एचएएल को उम्मीद है कि वह मार्च 2027 तक ही पहले 18-25 तेजस एमके 1ए की डिलीवरी कर पाएगा। रिपोर्ट के मुताबिक कपूर ने भविष्य में तेजस एमके2 की भूमिका को पूरी तरह से खारिज नहीं किया। उन्होंने कहा कि आपके पास 5वीं और 6वीं पीढ़ी के कुछ फाइटर जेट हो सकते हैं।

70 साल के दादा ने पोती से साथ किया मुंह काला, पुलिस ने किया गिरफ्तार

हाथरस।

यूपी के हाथरस जिले में पोती से दुष्कर्म के आरोप में 70 साल के दादा को गिरफ्तार किया है। लड़की ढाई महीने की गर्भवती है। पुलिस के मुताबिक लड़की ने आरोप लगाया कि उसके दादा ने करीब तीन महीने तक उससे दुष्कर्म किया, जिसके परिणामस्वरूप वह गर्भवती हो गई। लड़की की मां का निधन हो चुका है। वह अपने पिता और दादा के साथ रहती है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक लड़की का आरोप है कि पिता के काम पर चले जाने के बाद दादा उसको घर में अकेला पाकर उसके साथ दुष्कर्म करते थे। लड़की को पेट दर्द की शिकायत पर शनिवार को उसे डॉक्टर के पास जांच के लिए ले जाया गया, जहां उसके गर्भवती होने की बात सामने आई।

शिकायत में लड़की ने कहा है कि वह करीब तीन-चार महीने पहले अपने मामा के यहां से वापस आई थी। उसने आरोप लगाया 20 जून से उसके दादा ने कई बार दुष्कर्म किया। पुलिस ने बताया कि लड़की को जांच के लिए जिला अस्पताल भेजा गया था जहां उसके ढाई महीने की गर्भवती होने की पुष्टि हुई। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। आगे की जांच जारी है।

हिमाचल में मानसून का कहर जारी, 149 सड़कें बंद; अब तक 224 लोगों की मौत

भारी बारिश से सड़क, बिजली और पेयजल व्यवस्था प्रभावित
मानसून सीजन में 1,121 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान

शिमला।

हिमाचल प्रदेश में मानसून का कहर लगातार जारी है। प्रदेश के कई हिस्सों में हो रही भारी बारिश के चलते जनजीवन प्रभावित हुआ है। भूस्खलन, सड़क धंसने और बारिश से हुए नुकसान के कारण यातायात व्यवस्था पर असर पड़ा है, जबकि बिजली और पेयजल सेवाएं भी बाधित हुई हैं। राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र की 23 अगस्त सुबह 10 बजे जारी रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में 149 सड़कें बंद हैं। इसके अलावा 60 बिजली वितरण ट्रांसफार्मर प्रभावित हुए हैं और 35 पेयजल योजनाएं बाधित हैं। सबसे अधिक असर मंडी जिले में देखने को मिल रहा है, जहां 86 सड़कें बंद हैं। कुल्लू में 31, शिमला में 10, चंबा और कांगड़ा में आठ-आठ, ऊना में चार तथा बिलासपुर और लाहौल-स्पीति में एक-एक सड़क बंद होने की जानकारी दी गई है। किन्नौर, सिरमौर और सोलन जिलों में फिलहाल किसी सड़क के बंद होने की सूचना नहीं है। भारी बारिश का असर बिजली आपूर्ति पर भी पड़ा है। मंडी जिले में 25 और चंबा में 20 बिजली वितरण ट्रांसफार्मर प्रभावित हुए हैं। इसके अलावा शिमला में 11, कांगड़ा में तीन और कुल्लू में एक ट्रांसफार्मर बाधित है। पेयजल योजनाओं की स्थिति भी चिंताजनक बनी हुई है। हमीरपुर में सबसे अधिक 30 पेयजल योजनाएं प्रभावित हैं। शिमला की चार और कांगड़ा की एक योजना भी बाधित होने की जानकारी सामने आई है। प्रशासन प्रभावित सेवाओं को जल्द बहाल करने के प्रयास में जुटा है। मानसून सीजन में अब तक 224 लोगों की मौत राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र की 30 जून से 22 अगस्त तक की संचयी रिपोर्ट के अनुसार, इस मानसून सीजन में प्रदेश में अब तक 224 लोगों की मौत हो चुकी है। इस दौरान 330 लोग घायल हुए हैं, जबकि एक व्यक्ति अभी भी लापता बताया गया है। कुल मौतों में 91 लोगों की जान प्राकृतिक आपदा और उससे जुड़ी घटनाओं में गई है, जबकि 133 लोगों की मौत सड़क दुर्घटनाओं में हुई। आपदा से

संबंधित घटनाओं में भूस्खलन, बाढ़, डूबने, पत्थर गिरने और अन्य हादसे शामिल हैं। 1,121 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान मानसून की मार से हिमाचल प्रदेश को अब तक करीब 1,121.30 करोड़ रुपये का नुकसान होने का अनुमान है। निजी और सार्वजनिक संपत्तियों के साथ मकानों, दुकानों, गौशालाओं और अन्य ढांचों को भी भारी क्षति पहुंची है। रिपोर्ट में 441 पशुओं की मौत दर्ज की गई है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

जिनके घर शीशे के हों वह दूसरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंकते

वास्तव में कंगना की इस तरह की स्वीकारोक्ति को ही आधार बनाकर रामदेव ने उन्हें लेकर अनेक प्रश्न खड़े कर दिये। और प्रश्नों की उसी शब्दावली के अनुरूप ही कंगना ने भी रामदेव पर सीधा व्यक्तिगत प्रहार करते हुये कहा कि बाबा जी, मेरी जवानी या बेडरूम के बारे में आप दिन में सपने मत देखिए। कोई सिर्फ़ अफ़वाहों और गॉसिप के आधार पर ही ऐसा अंदाज़ा लगा सकता है। कंगना ने पतंजलि के भ्रामक विज्ञापनों वाले मामले की ओर इशारा करते हुये कहा कि कम से कम मुझे कभी झूठे या फ़र्ज़ी मेडिकल दावों के लिए सुप्रीम कोर्ट से फटकार नहीं लगी है।

(लेखक- तनवीर जाफ़रीस)

देश में इन दिनों छात्रों और युवा पीढ़ी अर्थात जेन-जी के छिड़े घमासान के बीच जेन-जी को ही केंद्र में रखकर कुछ ऐसे बयान सुनने में आ रहे हैं जिनकी न तो भाषा शालीन है न ही बयान देने वालों का व्यक्तित्व ही ऐसा है जिसे देश में शिक्षा, रोज़गार, पारदर्शिता, जवाबदेही, भ्रष्टाचार, लोकतंत्र तथा संवैधानिक मूल्यों को लेकर संघर्षरत युवा पीढ़ी व छात्रों से जोड़ा जा सके। इस संबंध में सबसे दिलचस्प वाकयुद्ध बाबा रामदेव व फ़िल्म अभिनेत्री व भारतीय जनता पार्टी सांसद कंगना रनौत के बीच छिड़ा। इस वाक्युद्ध ने एक दूसरे की पोल पट्टी खोलकर रख दी। ग़ौरतलब है कि बीजेपी सांसद कंगना रनौत ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर नीट पेपर लीक मामले के विरोध में प्रदर्शन कर रही युवा पीढ़ी पर तीखी टिप्पणियां की थीं। कंगना ने प्रदर्शनकारी युवाओं को गटर जनरेशन कहकर संबोधित किया था। उन्होंने इंस्टाग्राम पर लिखा था कि जेन-जी के आंदोलनों के वीडियो देखकर मुझे झटका लगा। मैंने अपनी ज़िंदगी में इतना अजीब और इतना बुरा कुछ नहीं देखा है। इन्हें (युवा पीढ़ी को) किसने जन्म दिया है? कौन इनका पालन-पोषण कर रहा है? यह गटर की पीढ़ी है। कंगना ने प्रदर्शन के दौरान युवाओं द्वारा इस्तेमाल की जा रही भाषा को बेहद असभ्य और अमर्यादित बताया था। उन्होंने इसे उल्टी आने जैसा व्यवहार क़रार दिया था। प्रदर्शनकारी छात्राओं और युवतियों पर निशाना साधते हुए कंगना ने कहा था कि इन लड़कियों का आचरण बेहद निराशाजनक है। उन्होंने कहा कि यह लड़कियां भविष्य में अच्छी गृहिणी भी नहीं बन सकतीं। कंगना ने केवल छात्रों को ही नहीं बल्कि उनके माता-पिता को भी कटघरे में खड़ा किया। उन्होंने सवाल उठाया कि माता-पिता अपने बच्चों को ऐसे संस्कार कैसे दे सकते हैं, जो उन्हें सार्वजनिक रूप से इस तरह के अभद्र व्यवहार की अनुमति देते हैं?

कंगना रनौत के इस बयान की ख़ासकर इसकी शब्दावली की चारों ओर घोर आलोचना की गयी। परन्तु सबसे तीखी प्रतिक्रिया योग गुरु एवं व्यवसायी बाबा रामदेव द्वारा एक टी वी चैनल पर इसी संबंध में पूछे गये एक सवाल पर दी गयी। जब बाबा रामदेव से कंगना के गटर जेनरेशन वाले बयान पर सवाल पूछा गया, तो उन्होंने कंगना की मानसिक स्थिति, उनकी योग्यता और उनके अतीत पर ही गंभीर सवाल उठा दिये। रामदेव ने कहा कि उनकी क्वालिफ़िकेशन (शिक्षा)क्या है? उनका बचपन कैसा रहा है? उनकी जवानी कैसी रही है? उनके पहले के कारनामे कैसे रहे हैं? मैं ऐसे लोगों के बारे में बात नहीं करना चाहता। किसी भी देश के जवानों को और जेन-ज़ी को गटर बोलना यह बिगड़े हुए दिमाग़ की निशानी है। यह ग़लत बात है और उनकी पार्टी (बीजेपी) को इस पर संज्ञान लेना चाहिए। हमेशा भाजपा सरकार की पैरवी करने वाले बाबा रामदेव के इस बयान को लेकर वैसे भी लोग आश्चर्यचकित हैं कि आख़िर उन्होंने किस तरह सत्ता के विरोध में आवाज़ उठाने की हिम्मत जुटाई? कुछ लोग तो उनके इस बयान की वजह से उन्हें राजनीति का मौसम विज्ञानी भी कहने लगे हैं। बहरहाल सवाल यह है कि रामदेव ने कंगना रानौत को लेकर इतने सारे सवाल एक साथ कैसे और किस आधार पर खड़े किये? और क्या वजह थी कि रामदेव के इन सवालों से तिलमिलाकर कंगना को भी रामदेव पर तीखे जवाबी बाण छोड़ने पड़े?

दरअसल कंगना रनौत ने स्वयं अपने अनेक इंटरव्यू में अपने शुरुआती जीवन, चरित्र, नशे और संघर्षों को लेकर बेहद चौंकाने वाले और बेबाक बयान दिए थे। उनके ये बयान समय-समय पर सोशल मीडिया और मीडिया गलियारों में बड़े विवाद की वजह बने हैं। कंगना रनौत ने साल 2020 में अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो पोस्ट किया था। इस वीडियो में उन्होंने खुलकर स्वीकार किया था कि वह एक समय पर ड्रग्स की लत का शिकार हो चुकी थीं। उन्होंने कहा था कि जब मैं घर से भागी थी, उसके डेढ़-दो साल के अंदर ही मैं एक फ़िल्म स्टार भी थी और एक ड्रग एडिक्ट भी थी। उन्होंने यह भी आरोप लगाया था कि शुरुआती दिनों में उनके एक मेंटॉर जो बाद में प्रताड़ित करने वाले बन गए, उनकी ड्रिंक्स में नशीली चीज़ें मिलाकर देते थे ताकि वह पुलिस के पास न जा सकें। बाद में एक इंटरव्यू में उन्होंने स्पष्ट किया कि वे योग और स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं की मदद से नशे की इस लत से बाहर आ पाईं। उसी 2020 के वीडियो में अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए कंगना ने खुद को ख़तरनाक बताया था। उन्होंने कहा था कि जब वह कम उम्र में घर से भागकर मुंबई आई थीं, तो बहुत ग़लत लोगों के चंगुल में फंस गई थीं। उन्होंने कहा था कि मेरी ज़िंदगी में इतने स्कैंडल चल रहे थे और मैं ऐसे लोगों के हाथों में पड़ गई थी, जहां से सिर्फ़ मौत ही मुझे बचा सकती थी। यह सब मेरी ज़िंदगी में तब हो रहा था जब मैं सिर्फ़ एक टीनेजर (किशोरी) थी। सोच लो, मैं कितनी ख़तरनाक हूँ! कंगना ने यह भी बताया था कि उनके पिता उन्हें डॉक्टर बनाना चाहते थे, लेकिन जब उन्होंने मना किया तो उनके पिता ने उन्हें थप्पड़ मारा था, जिसके बाद उन्होंने घर छोड़ दिया। वह महज़ 15-16 साल की उम्र में बिना पैसों के घर से भागकर दिल्ली और फिर मुंबई आ गई थीं।

वास्तव में कंगना की इस तरह की स्वीकारोक्ति को ही आधार बनाकर रामदेव ने उन्हें लेकर अनेक प्रश्न खड़े कर दिये। और प्रश्नों की उसी शब्दावली के अनुरूप ही कंगना ने भी रामदेव पर सीधा व्यक्तिगत प्रहार करते हुये कहा कि बाबा जी, मेरी जवानी या बेडरूम के बारे में आप दिन में सपने मत देखिए। कोई सिर्फ़ अफ़वाहों और गॉसिप के आधार पर ही ऐसा अंदाज़ा लगा सकता है। कंगना ने पतंजलि के भ्रामक विज्ञापनों वाले मामले की ओर इशारा करते हुये कहा कि कम से कम मुझे कभी झूठे या फ़र्ज़ी मेडिकल दावों के लिए सुप्रीम कोर्ट से फटकार नहीं लगी है। मेरे दावे हमेशा ठोस तथ्यों पर आधारित होते हैं, न कि किसी अफ़वाह पर। कंगना ने बाबा रामदेव को करारा जवाब देते हुए कहा, इसलिए आप मुझे चरित्र का पाठ मत पढ़ाइए। मेरा चरित्र आपसे कहीं ज्यादा बेहतर है, यहां कोई धोखाधड़ी/फ्रॉड नहीं पकड़ी गई है। कंगना द्वारा रामदेव इसतरह के शब्द बाण भी अकारण नहीं छोड़े गये। इसके पीछे रामदेव और उनकी कंपनी पतंजलि आयुर्वेद के खिलाफ विभिन्न अदालतों विशेषकर सुप्रीम कोर्ट और सरकारी प्राधिकरणों द्वारा की गई कई गंभीर कानूनी और प्रशासनिक कार्रवाइयां शामिल हैं। कभी सुप्रीम कोर्ट ने पतंजलि आयुर्वेद को उन सभी दवाओं और उत्पादों के विज्ञापन और ब्रांडिंग करने से पूरी तरह रोक दिया, जो ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज (आपत्तिजनक विज्ञापन) अधिनियम, 1954 के तहत प्रतिबंधित बीमारियों को पूरी तरह ठीक करने का दावा करते थे कभी कोर्ट में लिखित आश्वासन देने के बावजूद भ्रामक विज्ञापन जारी रखने पर कोर्ट ने उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया। कभी कोर्ट ने उन्हें व्यक्तिगत रूप से अदालत में हाज़िर होने का आदेश दिया और उनकी क़ानूनी टीम को कड़ी फटकार लगाई। तो कभी उन्होंने अदालत में बिना शर्त माफ़ी मांगी अदालत ने महज़ दिखावा कहकर ख़ारिज कर दिया था। यहाँ तक कि कड़े अदालती रुख़ के बाद पतंजलि को देश के प्रमुख राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समाचार पत्रों में बड़े आकार में सार्वजनिक माफ़ीनामा प्रकाशित करना पड़ा। इस तरह के अनेक उदाहरण हैं जिनसे यह साबित होता है कि रामदेव व उनका व्यवसाय भी दूध का धुला नहीं। कुल मिलाकर कंगना रानौत हों या रामदेव दोनों ही अपने उज्जवल भविष्य के लिये चिंतित व संघर्षरत देश की युवा पीढ़ी के लिये आदर्श नहीं हो सकते न ही इनकी नसीहत या आलोचना युवाओं के पतन या उत्थान का कारण बन सकती है। हाँ युवा पीढ़ी के बहाने इनके बीच चले वाक्युद्ध से यह ज़रूर साफ़ हो गया है कि जिनके अपने घर शीशे के हों उन्हें दूसरों के घरों पत्थर हरगिज़ नहीं फेंकना चाहिये।

(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

संपादकीय

सरकारी विद्यालयों की दशा

यह अच्छा है कि विभिन्न कारणों से सरकारी स्कूलों की दशा की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ है। कहीं सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र ही उनकी समस्याएं उजागर कर रहे हैं तो कहीं काकरोच जनता पार्टी के कार्यकर्ता उनकी हालत बयान कर रहे हैं। हालांकि वे ऐसा संकीर्ण राजनीतिक इरादों से करते दिख रहे हैं, लेकिन उनकी स्थिति पर चर्चा छिड़ना इसलिए उचित है, क्योंकि उनमें पठन-पाठन की उपयुक्त व्यवस्था करने की सख्त जरूरत है। एक समय अधिकांश बच्चे सरकारी स्कूलों पर ही निर्भर थे। तब उनकी स्थिति अपेक्षाकृत संतोषजनक थी, लेकिन जैसे-जैसे निजी विद्यालय खुलते गए, वे उपेक्षित होते गए। हालांकि सरकारें उन पर धन खर्च कर रही हैं, लेकिन इस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है कि उसका समुचित इस्तेमाल हो रहा है या नहीं? जब समय के साथ सरकारी विद्यालयों की दशा सुधरनी चाहिए थी, तब ऐसे सरकारी विद्यालयों और विशेष रूप से प्राइमरी विद्यालयों की गिनती करना कठिन है, जिनके पास उपयुक्त भवन ही नहीं हैं। न जाने कितने सरकारी विद्यालय जर्जर इमारतों में चल रहे हैं। कुछ तो ऐसे हैं, जिनके पास भवन के नाम पर कुछ है ही नहीं। इसके अतिरिक्त तमाम ऐसे सरकारी स्कूल भी हैं, जिनमें सामान्य बुनियादी सुविधाओं का भी टोटा है। समस्या केवल इतनी ही नहीं है कि सरकारी विद्यालयों के पास ढंग के भवन, पीने के पानी की सुविधा और शौचालय सरीखी बुनियादी सुविधाएं नहीं है। समस्या यह भी है कि वे शिक्षकों के अभाव से भी जूझ रहे हैं। इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि बहुत से सरकारी विद्यालयों में केवल एक ही शिक्षक है। आखिर संसाधनों से विहीन स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र सही तरीके से शिक्षित कैसे हो पाएंगे? चूंकि सरकारी स्कूलों की दुर्दशा दूर होने का नाम नहीं ले रही है, इसलिए लोग अपने बच्चों को वहां पढ़ाने से कतराते हैं और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद उन्हें निजी विद्यालयों में भेजने के लिए विवश होते हैं। आमतौर पर वही अभिभावक सरकारी विद्यालयों में अपने बच्चों को भेजते हैं, जिनके पास इसके अलावा और कोई उपाय नहीं होता। वैसे तो इसके पहले भी सरकारी विद्यालयों की दुर्दशा सामने आती रही है, लेकिन चिंता की बात यह है कि वह दूर होने का नाम नहीं ले रही है। राज्य सरकारों को इसके लिए सक्रिय होना होगा कि सरकारी स्कूलों की दशा सुधरे और उनमें पठन-पाठन का स्तर ऐसा हो कि लोगों को मजबूरी में निजी विद्यालयों की ओर रुख न करना पड़े। इस मामले में केंद्र सरकार को भी यह देखना चाहिए कि राज्य सरकारें उदाहरण पेश करें। यदि भारत को वास्तव में विकसित देश बनाना है तो इसका एक उपाय शिक्षा की बुनियाद ठीक करना है।

एआई की रफ्तार के बीच मानवीय विवेक जरूरी, टीआईएसएस दीक्षांत समारोह से बड़ा संदेश

(ले खिका - तमन्ना रिज़वी)

जब मशीनें सोचने लगी हैं, तब इंसान के लिए सबसे जरूरी सवाल यह नहीं है कि एआई कितना आगे जाएगा, बल्कि यह है कि इंसान अपने विवेक को कितना आगे रख पाएगा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने काम करने, सीखने और जानकारी हासिल करने की रफ्तार बदल दी है। कुछ ही सेकंड में वह ऐसी जानकारी सामने ला सकता है, जिसे जुटाने में इंसान को घंटों लग सकते हैं। लेकिन मशीनों की इस तेज होती दुनिया में संवेदना, नैतिकता और सही-गलत के बीच फर्क करने की क्षमता आज भी इंसान की सबसे बड़ी ताकत है। इसी बदलती दुनिया और उसकी चुनौतियों पर विचार का एक महत्वपूर्ण अवसर बना मुंबई में हुआ टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस) का 86वां दीक्षांत समारोह। यहां डिग्री हासिल करने वाले विद्यार्थियों के साथ-साथ एआई और तकनीक के बढ़ते प्रभाव को लेकर भी एक बड़ा संदेश सामने आया—तकनीक को अपनाना जरूरी है, लेकिन उसे अपनी सोच और विवेक का विकल्प बनने देना खतरनाक हो सकता है।

टीआईएसएस के चांसलर प्रो. डी. पी. सिंह, जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यानी यूजीसी के पूर्व चेयरमैन रह चुके हैं, ने एआई की संभावनाओं और चुनौतियों को समझाने के लिए भारतीय पौराणिक कथा 'समुद्र मंथन' का उदाहरण दिया। समुद्र मंथन से अमृत भी निकला था और हलाहल विष भी। ठीक इसी तरह एआई भी अपने भीतर अवसर और जोखिम दोनों समेटे हुए है। तकनीक कितनी उपयोगी साबित होगी, यह केवल उसकी क्षमता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है कि इंसान उसका इस्तेमाल किस उद्देश्य और किस जिम्मेदारी के साथ करता है।

आज एआई शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य, मीडिया, कारोबार और शोध तक लगभग हर क्षेत्र में पहुंच चुका है। विद्यार्थी इसका इस्तेमाल पढ़ाई और रिसर्च में कर रहे हैं, डॉक्टर और स्वास्थ्य विशेषज्ञ डेटा को समझने में इसकी मदद ले रहे हैं, पत्रकार शोध और जानकारी को व्यवस्थित करने में एआई का इस्तेमाल कर रहे हैं और कारोबारी संस्थान इससे कई प्रक्रियाओं को तेज बना रहे हैं।

लेकिन एआई की यही ताकत कुछ नई चिंताएं भी लेकर आई है। गलत जानकारी, डीपफेक, फर्जी तस्वीरें और वीडियो, निजी डेटा की सुरक्षा, एल्गोरिदम में मौजूद पक्षपात और एआई-जनरेटेड सामग्री की विश्वसनीयता जैसे सवाल लगातार महत्वपूर्ण हो रहे हैं। किसी मशीन ने कोई जानकारी दे दी, इसका मतलब यह नहीं कि वह जानकारी हमेशा सही भी होगी। इसलिए आने वाले समय में जानकारी हासिल करने से ज्यादा जरूरी जानकारी की जांच करना होगा।

यहीं से इंसान की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। एआई लिख सकता है, गणना कर सकता है, तस्वीर बना सकता है और डेटा का विश्लेषण कर सकता है, लेकिन वह किसी फैसले के मानवीय असर को उसी तरह महसूस नहीं कर सकता। किसी व्यक्ति की पीड़ा, किसी परिवार की परिस्थिति या किसी समाज की संवेदनशीलता को समझने के लिए सिर्फ आंकड़े पर्याप्त नहीं होते।

टीआईएसएस के वाइस चांसलर प्रो. बद्री नारायण तिवारी ने भी संस्थान की बदलती शैक्षणिक दिशा और भविष्य की योजनाओं पर जोर दिया। टीआईएसएस भारत और टीआईएसएस ग्लोबल जैसी पहलों के जरिए संस्थान शिक्षा, शोध और सामाजिक प्रभाव को व्यापक बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। सामाजिक विज्ञान के साथ डेटा, एनालिटिक्स, तकनीक और सस्टेनेबिलिटी जैसे क्षेत्रों का जुड़ना इस बात का संकेत है कि भविष्य की शिक्षा भी बदल रही है।

टीआईएसएस का 86वां दीक्षांत समारोह इसी बदलाव की तस्वीर पेश करता है। समारोह में 1,300 से अधिक विद्यार्थियों और शोधार्थियों को डिग्रियां प्रदान की गईं। इनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, एकीकृत और दोहरी डिग्री कार्यक्रमों के विद्यार्थी तथा डॉक्टरेट शोधार्थी शामिल रहे। **Analytics and Sustainability Studies** के पहले स्नातक बैच का अपनी डिग्री हासिल करना भी इस बदलते शैक्षणिक दौर की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

टीआईएसएस का मुख्य परिसर मुंबई में है, जबकि इसके अन्य कैंपस तुलजापुर, हैदराबाद और गुवाहाटी में हैं। इन परिसरों के जरिए संस्थान सामाजिक विज्ञान, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण विकास, सार्वजनिक नीति और सामाजिक बदलाव से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन और शोध को आगे बढ़ाता है।

1936 में स्थापित टीआईएसएस अपनी 90 वर्षों की शैक्षणिक और सामाजिक यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव पर भी है। संस्थान इस 90वें वर्ष को 'नवाती' के रूप में मना रहा है। 'नवाती' का अर्थ 90 है। यह किसी व्यक्ति की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम नहीं, बल्कि संस्थान की नौ दशक लंबी यात्रा, उपलब्धियों और भविष्य की दिशा को रेखांकित करने वाला अवसर है।

लेकिन इस पूरे आयोजन की असली अहमियत डिग्रियों की संख्या से कहीं आगे है। आज की युवा पीढ़ी ऐसे समय में आगे बढ़ रही है, जब एआई उसके करियर और काम करने के तरीके को बदलने वाला है। आने वाले समय में कई ऐसे काम मशीनें कर सकती हैं, जिन्हें आज इंसान कर रहा है। ऐसे में युवाओं के लिए सिर्फ तकनीकी ज्ञान पर्याप्त नहीं होगा। क्रिटिकल थिंकिंग, रचनात्मकता, संवाद, संवेदनशीलता और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता उनकी सबसे बड़ी ताकत बन सकती है।

हमें यह भी समझना होगा कि एआई का इस्तेमाल कब करना है और कब अपनी समझ पर भरोसा करना है। हर तेज जवाब सही जवाब नहीं होता और हर तकनीकी समाधान जरूरी नहीं कि मानवीय समाधान भी हो। यही वजह है कि एआई के दौर में इंसान की भूमिका कम नहीं, बल्कि और महत्वपूर्ण हो रही है। मशीनें जितनी तेज और सक्षम होती जाएंगी, इंसान को उतना ही अधिक सजग, जिम्मेदार और संवेदनशील होना पड़ेगा।

AI भविष्य को तेज बना सकता है, लेकिन उस भविष्य की दिशा इंसान के विवेक, मूल्यों और संवेदनशीलता से ही तय होगी। यही टीआईएसएस के 86वें दीक्षांत समारोह से निकलने वाला वह संदेश है, जो डिग्री लेने वाले विद्यार्थियों से कहीं आगे पूरी नई पीढ़ी के लिए मायने रखता है।

(यह लेखिका के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

चिंतन मनन

सत्ता और नैतिकता

सत्ता के संचालन में शक्ति की अपेक्षा रहती है या नहीं, यह एक बड़ा प्रश्न है। शक्ति दो प्रकार की होती है- नैतिक शक्ति और उपकरण शक्ति। नैतिक शक्ति के बिना तो व्यक्ति सही ढंग से प्रशासन कर ही नहीं सकता। उपकरण शक्ति का जहां तक प्रश्न है, एक सीमा तक वह भी जरूरी है। किंतु वह शक्ति का एकमात्र तत्व नहीं है। उससे भी अधिक आवश्यक है- बुद्धि, विवेक, साहस और निर्णायक क्षमता। जिस शासक में ये चारो तत्व नहीं होते, वह सही रूप से सत्ता को संचालित नहीं कर सकता। एक शासक के पास बहुत बड़ी सेना हो, शस्त्रों का विशद भंडार हो; पर सही समझ न हो और समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता न हो तो शक्ति भी अहितकर बन जाती है। सामान्यतः राष्ट्रीय एवं सामाजिक सत्ता के संचालन में शक्ति तत्व अपेक्षित रहता है, पर वही सब कुछ नहीं है, परम तत्व नहीं है।

अधिकारी व्यक्ति की चरित्रनिष्ठा, जागरूकता और जनता की सहानुभूति का योग होने से ही सत्ता के गलियारों को पार किया जा सकता है। किसी एक तत्व की कमी होते ही प्रशासक विवादों के घेरे में खड़ा हो जाता है। उस समय वह सत्ता का संचालन करता है या सत्ता के द्वारा संचालित होता है, कुछ कहना कठिन है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम और रावण का प्रसंग प्रसिद्ध है। रावण की सत्ता से संसार कांपता था, इधर राम वनवासी थे। उनके पास न वैसी सेना थी, न वैसा शास्त्रबल था। फिर भी उन्होंने रावण की सत्ता को चुनौती दे दी। रावण धराशायी हो गया, क्योंकि उसका चरित्रबल क्षीण हो गया, सूझबूझ समाप्त हो गई, सही निर्णय लेने की क्षमता चुक गई और उसने जनता की सहानुभूति खोकर गृह-कलह के बीज बो दिए। शक्ति के सहारे सत्ता का संचालन होता तो न रावण मारा जाता और न कौरवों को पराजय का मुंह देखना पड़ता। पिछली सदी तक भारत का शासन-सूत्र अंग्रेज संभाल रहे थे, शक्ति की उनके पास कमी नहीं थी। उनके सामने भारत छोड़ने की विवशता शक्ति की कमी से नहीं थी। ये प्रसंग प्रमाणित करते हैं कि प्रबुद्ध जनता केवल शक्ति के आधार पर शासित नहीं हो सकती।

विचार मंथन

आंदोलन और महंगाई का बम, मुकाबले मे वंदे मातरम

(लेखक- सनत जैन)

भारत में इस समय आंदोलनों की बाढ़ आ गई है। कॉकरोच जनता पार्टी ने जंतर मंतर में प्रदर्शन किया उसके बाद से देश के हर राज्य में पहले जेन-जेड और जेन-अल्फा के प्रदर्शन शुरू हुए। युवा बड़ी संख्या में सड़कों पर उतरे। लगभग 250 से अधिक स्थानों पर एकाएक प्रदर्शन देखने को मिले। इसके ठीक बाद स्कूली छात्र-छात्राएं भी सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन करने लगे। इनकी देखा देखी जो लोग अभी तक डर और भय से प्रदर्शन करने से डरते थे वह भी प्रदर्शन करने के लिए सड़कों पर उतरने लगे। छात्रों ने जिस तरह का रुख अपनाया था इस तरह का रुख अब हर प्रदर्शन में अपनाया जा रहा है। जिसके कारण जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। आंदोलनो का यह वायरस बड़ी तेजी के साथ फैल रहा है। पश्चिम बंगाल की महिलाओं ने भी सड़कों पर आकर प्रदर्शन शुरू कर दिया है। चुनाव के पहले उन्हें 3000 रूपये देने का वादा किया गया था लेकिन लाखों महिलाओं के नाम काट दिए गए और 3000 रूपये का जो वायदा किया गया था वह नहीं दिया जा रहा है। रही सही कसर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के प्रदर्शन ने पूरी कर दी है। वह जंतर मंतर के आंदोलन में दिल्ली पुलिस द्वारा चलाई गई पैलेट गन से 10 आंदोलनकारी घायल हुए थे उसमें से एक आंदोलनकारी की आंख और हार्ट सहित शरीर में भारी संख्या में छर्रे घुसे थे। उस युवक को लेकर वह जंतर मंतर के थाने पहुंच गए। उसकी रिपोर्ट नहीं लिखी जा रही थी। राहुल गांधी रिपोर्ट लिखवाने के लिए अड़ गए। लगभग 6 घंटे उन्हें धरने पर बैठना पड़ा। उसके बाद जाकर उस युवक की रिपोर्ट लिखी गई। अब जितने भी आंदोलन हो रहे हैं आंदोलनकारी परिणाम मिलने या लिखित आश्वासन के बाद ही आंदोलन को खत्म कर रहे हैं। छात्रों के इस आंदोलन ने जैसे लोगों के मन से सरकार और पुलिस प्रशासन का डर निकाल दिया है। अब डू एंड डाई की तरह आंदोलनकारी प्रदर्शन के लिए उतर रहे हैं। जिसके कारण केंद्र सरकार और राज्य सरकारों की चिंता बढ़ गई है। हाल ही में राहुल गांधी ने पुणे में जाकर छात्राओं व महिलाओं का जो कार्यक्रम किया वह काफी सफल रहा। हजारों महिलाएं इस कार्यक्रम में शामिल हुईं और उन्होंने अपनी बात खुलकर कही। केंद्र की भाजपा सरकार डबल इंजन की राज्य सरकारें तथा भारतीय जनता पार्टी इन आंदोलनों का मुकाबला करने के लिए विशेष रूप से कांग्रेस और राहुल गांधी का मुकाबला करने के लिए वंदे मातरम का ब्रह्मास्त्र लेकर आई है। इसी बीच महंगाई भी बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही है। लोगों में सरकारों के प्रति गुस्सा देखने को मिल रहा है। सरकारों एवं भाजपा का ध्यान महंगाई बेरोजगारी एवं अन्य समस्याओं को छोड़कर जिस तरह से वंदे मातरम को लेकर राहुल गांधी और कांग्रेस पर निशान साधा जा रहा है, उससे ऐसा लगता है सरकार को विश्वास है महंगाई, बेरोजगारी और आंदोलन के मुकाबले का जो बम फट रहा है उसका मुकाबला भाजपा वंदे मातरम से कर लेगी? भारतीय जनता पार्टी और मोदी सरकार यदि ऐसा सोचती है तो गलत है। वंदे मातरम का जो मुद्दा बनाया गया है यह आम लोगों के बीच में जगह नहीं बन पा रहा है। लोग आज जिस तरह की परेशानियों से जूझ रहे हैं उसमें वंदे मातरम को लेकर अब लोग यह कहने लगे हैं क्या इससे महंगाई कम हो जाएगी? क्या हमारी समस्याएं खत्म हो जाएंगी? 80 साल पहले क्या हुआ, किसने गलती की? राष्ट्रगान की जगह वंदे मातरम क्यों गया जाए, पूरा वंदे मातरम क्यों सरकार चाहती है? इससे वर्तमान की समस्याओं का निराकरण कैसे होगा। छात्र आंदोलन के बाद से धार्मिक ध्रुवीकरण और हिंदू मुस्लिम को लेकर जो राजनीति हो रही थी उसको भी बड़ा धक्का लगा है। भाजपा को अभी भी लगता है कि वह इस तरह के मुद्दों से वास्तविक समस्याओं को अनदेखा कर सकते हैं। भावात्मक रूप से लोगों को सपनों से या सैकड़ो साल पुरानी बातों से जोड़कर आम आदमी को लटका सकते हैं। तो यहां भाजपा गलती कर रही है। पिछले 12 वर्षों में सरकार ने जो जो वादे किए थे जो, सपने दिखाए थे, वह पूरे नहीं हुए हैं। प्रधानमंत्री मोदी की जो छवि जनता ने अपने मन और मस्तिष्क में बैठाई थी, उसमें से कुछ भी पूरा नहीं हुआ। जो विश्वास था, अब वह अविश्वास में बदल गया है। इमेज खत्म हो जाने के बाद अब केवल परिणाम ही भारतीय जनता पार्टी और डबल इंजन की सरकारों को ऑक्सीजन देने का काम कर सकते हैं। पिछले एक दशक में राहुल गांधी की इमेज एक पप्पू के रूप में बनाई गई थी, पहले कहा जाता था मोदी नहीं तो कौन, अब पूरी बीजेपी राहुल गांधी के पीछे है। अब जनता के बीच से एक विकल्प राहुल गांधी के रूप में सामने आ रहा है। पिछले दो वर्षों में राहुल गांधी ने जिस तरह से अपनी छवि को सुधारा है, राहुल गांधी आम जनता के बीच एक विश्वास के रूप में देखे जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में भाजपा को परिणाम देने की ओर ध्यान देना चाहिए। आंकड़ों से या वास्तविकता से मुंह मोड़कर भाजपा पुराने रास्ते पर चलेगी तो भाजपा का नुकसान होना तय है। समय रहते यह बात समझनी होगी। छोटे-छोटे बच्चे जिस तरह से बाहर निकल कर आ रहे हैं। हर परिवार में बच्चे हैं। यह बच्चे जिद्दी हैं। वह अपने परिवार में भी अपनी बात मुखरता से कहते हैं। अपनी बात मनवाना जानते हैं। इसी बात का असर अब हर परिवार पर पड़ने लगा है। नई पीढ़ी को ना तो राजनीतिक दल से लेना देना है, ना ही उसे धर्म से कोई लेना देना है। वह वर्तमान में जीना चाहता है। यही सत्य है, भाजपा को इस सत्य को जल्द से जल्द समझना होगा।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सोने में रिकॉर्ड तोड़ उछाल, एक सप्ताह में 7,960 रुपए तक महंगा हुआ सोना

- दिल्ली में 24 कैरेट सोना 1.63 लाख प्रति 10 ग्राम के पार, मुंबई में भी कीमतें 1.63 लाख से अधिक

नई दिल्ली ।

पिछले एक सप्ताह में देश भर में सोने की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गई है। 24 कैरेट सोने की कीमत में प्रति 10 ग्राम में भारी उछाल आया है, जबकि अन्य कैरेट के सोने में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी देखी गई है। यह तेजी वैश्विक और घरेलू दोनों बाजारों में सोने की मांग में वृद्धि का परिणाम है। देश के कई शहरों में पिछले एक सप्ताह के दौरान सोने की कीमतों में जोरदार तेजी देखी गई है। 24 कैरेट वाले सोने की कीमत में प्रति 10 ग्राम 7,960 रुपये तक का इजाफा हुआ है। इसी अवधि में, 22 कैरेट गोल्ड 7,300 रुपये और 18 कैरेट सोने की कीमत में 5,970 रुपये प्रति 10 ग्राम की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। रे विवार को राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट वाले सोने की कीमत 1.63 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के पार हो चुकी है। मुंबई में भी इसकी कीमत 1,63,090 रुपये प्रति 10 ग्राम रही। अंतरराष्ट्रीय बाजार में हाजिर सोना 4,600.91 डॉलर प्रति औंस के आसपास कारोबार कर रहा है, जो वैश्विक स्तर पर कीमतों में मजबूती का संकेत देता है। आंकड़ों के अनुसार 16 अगस्त को जहां 24 कैरेट सोना 1,55,280 रुपये प्रति 10 ग्राम था, वहीं 23 अगस्त को यह 1,63,240 रुपये पर पहुंच गया। इसी तरह 22 कैरेट सोना 1,42,350 रुपये से बढ़कर 1,49,650 रुपये और 18 कैरेट सोना 1,16,500 रुपये से बढ़कर 1,22,470 रुपये हो गया है। यह उछाल निवेशकों के लिए सोने को एक सुरक्षित निवेश विकल्प के रूप में दर्शाता है।

शीर्ष 10 में से 4 कंपनियों का मार्केट कैप 87,960 करोड़ घटा

भारती एयरटेल को सर्वाधिक 28,052 करोड़ का नुकसान; एलआईसी और रिलायंस में बढ़त

मुंबई ।

स्थानीय शेयर बाजार में बीते सप्ताह जारी नरमी के बीच शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से चार के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 87,960.29 करोड़ रुपये की गिरावट दर्ज की गई, जिसमें दूरसंचार दिग्गज भारती एयरटेल को सर्वाधिक नुकसान उठाना पड़ा है। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 468.42 अंक यानी 0.60 प्रतिशत नीचे आया, वहीं एनएसई निफ्टी में भी 114 अंक की गिरावट रही। इस बाजार गिरावट का सबसे बड़ा शिकार भारती एयरटेल रही, जिसका बाजार पूंजीकरण 28,052.96 करोड़ रुपये घट गया। इसके अलावा, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मूल्यांकन 22,070.34 करोड़ रुपये कम हुआ, जबकि भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के मार्केट कैप में 20,861.20 करोड़ रुपये और हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत में 16,975.79 करोड़ रुपये की कमी आई। हालांकि इस नकारात्मक रुख के उलट छह कंपनियों ने अपने बाजार पूंजीकरण में वृद्धि दर्ज की। भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) का बाजार पूंजीकरण 12,650 करोड़ रुपये बढ़कर 5,35,980.31 करोड़ रुपये हो गया। वहीं, रिलायंस इंडस्ट्रीज ने 8,119.53 करोड़ रुपये की बढ़त हासिल कर अपना शीर्ष स्थान बरकरार रखा। लार्सन एंड टुब्रो के मार्केट कैप में 3,487.83 करोड़ रुपये, बजाज फाइनेंस में 3,424.28 करोड़ रुपये, आईसीआईसीआई बैंक में 752.47 करोड़ रुपये और एचडीएफसी बैंक में 356.95 करोड़ रुपये की वृद्धि दर्ज की गई। बाजार पूंजीकरण के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज अभी भी देश की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी हुई है।

कच्चे तेल में उछाल, भारत में ईंधन की कीमतें स्थिर

ब्रेंट क्र ड 94.39 प्रति बैरल, पेट्रोल और डीजल के दाम स्थिर

नई दिल्ली । अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं, ब्रेंट क्रूड रे विवार को 0.65 फीसदी की तेजी के साथ 94.39 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है। हालांकि, भारतीय उपभोक्ताओं के लिए राहत की बात यह है कि देश में पेट्रोल, डीजल और एलपीजी की कीमतों में फिलहाल कोई बढ़ोतरी नहीं हुई है। राजधानी दिल्ली में रे विवार को पेट्रोल 102.12 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.20 रुपये प्रति लीटर पर स्थिर बना हुआ है। नोएडा में पेट्रोल 102.12 रुपये और डीजल 95.56 रुपये प्रति लीटर बिक रहा है। गुरुग्राम में पेट्रोल 102.97 रुपये और डीजल 95.64 रुपये प्रति लीटर पर है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में पेट्रोल 114.57 रुपये और डीजल 99.64 रुपये प्रति लीटर मिल रहा है।

वैश्विक कारकों से तय होगी शेयर बाजार की चाल

ईरान-अमेरिका संघर्ष और पश्चिम एशिया में अनिश्चितता भी वैश्विक बाजारों को प्रभावित करेगी

मुंबई।

पिछले सप्ताह प्रमुख सूचकांकों में गिरावट झेलने के बाद भारतीय शेयर बाजार आगामी सप्ताह में वैश्विक कारकों से प्रभावित रहेगा। निवेशकों की नजर खास तौर पर पश्चिम एशिया के भू-राजनीतिक तनाव और कच्चे तेल की कीमतों पर रहेगी।

ईरान और अमेरिका के बीच 60 दिन की अस्थायी युद्ध विराम अवधि समाप्त होने और कोई नया समझौता न होने से अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम एक बार फिर 90 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुंच गए हैं। आगामी सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच सीमित दायरे में कारोबार देखने को मिल सकता है।

बाजार की चाल मुख्यतः वैश्विक संकेतों, पश्चिम एशिया के तनाव, कच्चे तेल की कीमतों और अमेरिकी बॉन्ड यील्ड पर निर्भर करेगी। ईरान-अमेरिका संघर्ष और पश्चिम एशिया में अनिश्चितता वैश्विक बाजारों को प्रभावित करेगी।

ब्रेंट क्रूड की ऊंची कीमतें भारतीय अर्थव्यवस्था और बाजार पर दबाव बना रही हैं। अमेरिकी बाजारों का मिला-जुला रुख और बॉन्ड यील्ड में उतार-चढ़ाव निवेशकों को सतर्क रखेंगे।

चुनिंदा मिडकैप, स्मॉलकैप, डिफे स या बैंकिंग शेयरों में खरीदारी का रुझान दिख सकता है। निफ्टी और सेंसेक्स के एक निश्चित दायरे में रहने की उम्मीद है, इसलिए आक्रामक लॉन्ग पोजीशन लेते समय स्टॉप-लॉस का कड़ाई से पालन करें। ऊपरी स्तरों पर मुनाफावसूली की संभावना है, अतः केवल गुणवत्ता वाले शेयरों में ही निवेश करें।

एसबीआई का कारोबार 2030 तक 200 लाख करोड़ पहुंचने का अनुमान

बैंक चेयरमैन ने मौजूदा वृद्धि दर और अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन से जोड़ा अनुमान

नई दिल्ली।

देश के सबसे बड़े ऋणदाता भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का कुल कारोबार वर्ष 2030 तक 200 लाख करोड़ रुपए के विशाल आंकड़े को छू सकता है। बैंक के चेयरमैन सीएस. शेट्टी ने यह अनुमान मौजूदा वृद्धि दर और भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूत गति के आधार पर व्यक्त किया है, जो बैंक के 75वें स्थापना दिवस के करीब एक बड़ी उपलब्धि होगी। चेयरमैन शेट्टी ने एक साक्षात्कार में बताया कि यदि भारतीय अर्थव्यवस्था 7-8 प्रतिशत की दर से बढ़ती है, तो एसबीआई के बही-खाते में सालाना 11-12 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है, जिससे बैंक का कारोबार लगभग हर छह साल में दोगुना हो जाएगा। जून 2023 के अंत में एसबीआई का कुल कारोबार 110.01 लाख करोड़ रुपए था। उन्होंने स्पष्ट किया कि 200 लाख करोड़ रुपए का आंकड़ा कोई औपचारिक लक्ष्य नहीं, बल्कि मौजूदा रुझानों पर आधारित एक संभावित स्तर है। एसबीआई ने अपने 'दृष्टिकोण 2030' के तहत ग्राहकों, कर्मचारियों, शेयरधारकों तथा सरकार और नियामकों को प्राथमिकता दी है। बैंक कृषि, सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम (एमएसएमई) और ग्रामीण अर्थव्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को समर्थन देने के साथ-साथ बचत जुटाने में भी अग्रणी भूमिका निभाएगा। पूंजी के मोर्चे पर, बैंक साझा इक्विटी टियर-1 (सीईटी1) अनुपात लगभग 12 प्रतिशत और पूंजी पर्याप्तता अनुपात (सीआरएआर) लगभग 15 प्रतिशत बनाए रखने का लक्ष्य रखता है।

त्योहारों से पहले खाद्य तेलों में उतार-चढ़ाव- सस्ते आयातित मजबूत, महंगे देसी नरम

- घरेलू तेल 20-24 रुपए प्रति किलो महंगे होने से मांग प्रभावित, आयातित तेलों की धूम

नई दिल्ली ।

आगामी त्योहारों के मद्देनजर बीते सप्ताह खाद्य तेल बाजार में मिला-जुला रुख देखने को मिला। देशी तेलों के मुकाबले 20-24 रुपए प्रति किलो सस्ता होने के कारण सोयाबीन तेल, कच्चे पामतेल (सीपीओ) और पामोलीन जैसे आयातित खाद्य तेलों के दाम मजबूत हुए। वहीं ऊंचे दाम के चलते घरेलू सरसों तेल-तिलहन और सोयाबीन तिलहन में गिरावट दर्ज की गई।

बाजार सूत्रों के अनुसार देशी तेलों की तुलना में सस्ता होने से आगामी त्योहारों में मांग बढ़ने के कारण आयातित सोयाबीन तेल, सीपीओ और पामोलीन के दाम मजबूत रहे। विदेश में मजबूती के बावजूद आयातक इन्हें लागत से नीचे बेच रहे हैं, जिससे इनकी औद्योगिक मांग बढ़ी है। दूसरी ओर ऊंचे दाम के चलते लिवाली प्रभावित रहने से सरसों तेल-तिलहन के दाम मामूली रूप से गिरे। सोयाबीन संयंत्रों द्वारा खरीद मूल्य घटाए जाने से सोयाबीन तिलहन में भी गिरावट आई। मूंगफली तेल-तिलहन के दाम ऊंचे भाव पर कमजोर मांग के बीच स्थिर बने रहे। बिनौला तेल की उपलब्धता कम होने और ब्रांडेड कंपनियों की औद्योगिक मांग बढ़ने से इसके दाम में सुधार देखा गया। सूत्रों ने बताया कि बीते सप्ताह सरसों दाना 50 रुपये की गिरावट के साथ 8,250-8,300 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। इसी प्रकार सरसों तेल दादरी 50 रुपये की गिरावट के साथ 16,700 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

सरसों पक्की और कच्ची घानी तेल भी क्रमशः 5-5 रुपये की गिरावट के साथ क्रमशः 2,720-2,820 रुपये और 2,720-2,870 रुपये टिन (15 किलो) पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन दाना और सोयाबीन लूज का थोक भाव क्रमशः 125-125 रुपये की गिरावट के साथ क्रमशः 6,775-6,825 रुपये और 6,625-6,725 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

दूसरी ओर, दिल्ली में सोयाबीन तेल 125 रुपये के सुधार के साथ 15,800 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन इंदौर तेल 125 रुपये के सुधार के साथ 15,650 रुपये और सोयाबीन डीगम तेल 200 रुपये के सुधार के साथ 12,200 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। बीते सप्ताह मूंगफली तिलहन का दाम 7,350-7,925 रुपये क्विंटल, मूंगफली तेल गुजरात 17,000 रुपये क्विंटल और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल 2,680-2,980 रुपये प्रति टिन पर स्थिर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में सीपीओ तेल का दाम भी 250 रुपये के सुधार के साथ 13,950 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

पामोलीन दिल्ली 275 रुपये के सुधार के साथ 15,850 रुपये प्रति क्विंटल तथा पामोलीन एक्स कांडला तेल 275 रुपये के सुधार के साथ 14,600 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। ब्रांडेड कंपनियों की औद्योगिक मांग बढ़ने और उपलब्धता कम रहने के बीच बिनौला तेल का दाम 25 रुपये के सुधार के साथ 17,125 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

महिंद्रा लाइफस्टाइलर पिकअप से वैश्विक बाजार में बढ़ाएगी मौजूदगी

कंपनी कई देशों में उतारेगी नया मॉडल, भारत में 2027 में होगा लॉन्च

नई दिल्ली

घरेलू वाहन विनिर्माता महिंद्रा एंड महिंद्रा (एमएंडएम) अपने नए पिकअप वाहन स्कॉर्पियो लाइफस्टाइलर के साथ वैश्विक बाजारों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने की तैयारी में है। कंपनी का लक्ष्य दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, पश्चिम एशिया और लातिनी अमेरिका जैसे प्रमुख बाजारों में इस मॉडल को उतारना है। महिंद्रा के एक कार्यकारी अे धिकारी ने बताया कि यह वाहन भारत में अप्रैल 2027 में स्कॉर्पियो लाइफस्टाइलर नाम से पेश किया जाएगा, जबकि अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इसे महिंद्रा लाइफस्टाइलर के नाम से जाना जाएगा। उन्होंने जोर दिया कि इस पिकअप को विशेष रूप से वैश्विक जरूरतों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है और यह कंपनी की वैश्विक विकास रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उन्होंने दक्षिण-पूर्व एशियाई (आसियान) बाजारों में भी इसकी संभावनाओं का जिक्र किया, जहां कंपनी नए उत्पादों के साथ अपनी पैठ बढ़ाना चाहती है। कंपनी फिलहाल इंडोनेशिया को छोड़कर आसियान क्षेत्र के अन्य बाजारों में मौजूद नहीं है।

टाटा स्टारबक्स अपने स्टोर की संख्या बढ़ाने की तैयारी में

मुंबई ।

भारत में कॉफी चेन स्टारबक्स एक बार फिर आक्रामक विस्तार रणनीति अपनाने जा रही है। टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लि. (टीसीपीएल) के एक अे धिकारी ने बताया कि पिछले डेढ़-दो साल में कारोबारी मॉडल को नए सिरे से तैयार करने के बाद कंपनी को कारोबार में स्पष्ट सुधार के संकेत मिले हैं, जिसके चलते अब स्टोर खोलने की रफ्तार बढ़ाई जाएगी। टाटा स्टारबक्स ने लगातार चार तिमाहियों में समान स्टोर बिक्री में वृद्धि दर्ज की है और अब बिक्री में तेजी भी दिख रही है। वर्तमान में भारत में करीब 500 स्टारबक्स कैफे संचालित करने वाली टाटा स्टारबक्स की योजना अब मौजूदा लगभग 80 शहरों में ही स्टोर की संख्या (घनत्व) बढ़ाने पर है, न कि केवल नए शहरों में पहुंचने पर। डिसूजा ने बताया कि कंपनी ने पिछले दो वर्षों में स्टोर के आकार, प्रति स्टोर पूंजीगत खर्च और पेय पदार्थों की कीमतों सहित अपने पूरे कारोबारी मॉडल की समीक्षा की है, ताकि इसे अधिक टिकाऊ बनाया जा सके। जून तिमाही में टाटा स्टारबक्स का राजस्व 11 प्रतिशत बढ़ा और इस दौरान चार नए स्टोर भी खोले गए, जिनमें दो रिजर्व स्टोर शामिल हैं। टीसीपीएल के अे धिकारी ने जून में कहा था कि टाटा स्टारबक्स की दीर्घावधि महत्वाकांक्षा चीन के स्तर (लगभग 8,000 स्टोर) तक पहुंचने की है।

एफपीआई ने अगस्त में अब तक शेयर बाजार में डाले 23,544 करोड़

इस वर्ष अब तक विदेशी निवेशक शेयरों में 2,30,000 करोड़ से अधिक की बिकवाली कर चुके

नई दिल्ली।

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने अगस्त में भारतीय शेयर बाजार में अपनी लिवाली तेज कर दी है, इस महीने अब तक 23,544 करोड़ रुपये का बड़ा निवेश किया है।

जुलाई में किए गए 20,200 करोड़ रुपये के निवेश के बाद यह लगातार दूसरे महीने की लिवाली है, जो चार महीनों की भारी बिकवाली के बाद विदेशी निवेशकों के रुख में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है। कंपनियों के बेहतर तिमाही नतीजों, रुपये की स्थिरता और बाजार की मजबूत संभावनाओं ने निवेशकों का भरोसा बढ़ाया है। सीडीएसएल के आंकड़ों के अनुसार, एफपीआई ने जून से मार्च तक लगातार चार महीनों में भारी पूंजी निकाली थी। हालांकि, हाल की इस खरीदारी के बावजूद, इस वर्ष अब तक विदेशी निवेशक भारतीय शेयरों में 2,30,000 करोड़ रुपये से अधिक की शुद्ध बिकवाली कर चुके हैं, जो पिछले वर्ष की कुल निकासी से भी अधिक है। बाजार के जानकारों ने बताया कि पहली तिमाही के बेहतर कॉर्पोरेट नतीजे, रुपये की स्थिरता और व्यापक बाजार की मजबूत वृद्धि संभावनाएं एफपीआई की वापसी के मुख्य कारण हैं।

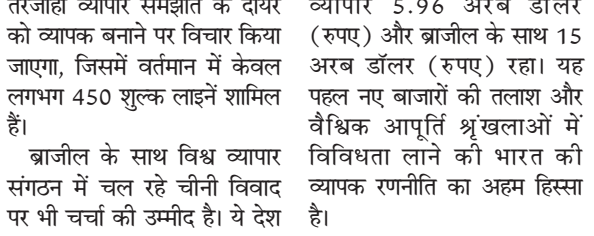

उन्होंने यह भी कहा कि विदेशी निवेशक बड़े बैंकिंग और आईटी शेयरों के बजाय, अपेक्षाकृत ऊंचे मूल्यांकन के बावजूद चुनिंदा मझोली कंपनियों के शेयरों में पैसा लगा रहे हैं। आगे चलकर बाजार की दिशा कच्चे तेल की कीमतों और अमेरिका-ईरान के बीच भू-राजनीतिक तनाव जैसे वैश्विक घटनाक्रमों से प्रभावित होगी, जिस पर निवेशकों की पैनी नजर रहेगी।

टैरिफ वॉर: अमेरिका पर कनाडा का पलटवार, पीएम कार्नी बोले हम पर हमला हुआ

ट्रंप प्रशासन की अंतिम पेशकश नामंजूर: एक साल से ज्यादा चली बातचीत टूटी

नई दिल्ली ।

अमेरिका और कनाडा के बीच चल रहा व्यापार विवाद अब खुलकर टैरिफ वॉर में बदल गया है। कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने अमेरिका के खिलाफ जवाबी शुल्क लगाने का ऐलान किया। उन्होंने कहा कि 8 सितंबर से कनाडा अमेरिकी सामान पर 'डॉलर के बदले डॉलर' के हिसाब से टैरिफ लगाएगा। कार्नी ने टेलीविजन पर कहा कि जब किसी देश पर हमला होता है तो वह युद्ध की स्थिति में होता है और कनाडा पर भी एक तरह से हमला हुआ है। कनाडा के नए जवाबी शुल्क डेयरी उत्पाद, स्टील, घरेलू उपकरण, खेती में इस्तेमाल होने वाले उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक्स और पल्प एवं पेपर सहित कई अमेरिकी सामानों पर लागू होंगे। दूसरी तरफ, अमेरिका ने शनिवार की शुरुआत में कनाडा के सामान पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया था, जिसमें हॉकी स्टिक सहित औद्योगिक सामान शामिल थे। कार्नी ने बताया कि कनाडा अमेरिकी एल्युमिनियम, स्टील और मोटर वाहनों पर मौजूदा जवाबी टैरिफ हटाने को तैयार था। लेकिन ट्रंप प्रशासन की अंतिम पेशकश स्वीकार्य नहीं थी, क्योंकि अमेरिका ने बहुत ज्यादा मांग की और बदले में बहुत कम देने की पेशकश की। कार्नी ने स्पष्ट किया कि कनाडा अपनी संप्रभुता से समझौता नहीं करेगा। एक साल से ज्यादा समय से चली आ रही बातचीत बेनतीजा रही, जिसके बाद कार्नी ने बातचीत रोकने का फैसला किया।

कार्नी ने आरोप लगाया कि बातचीत के आखिरी दौर में अमेरिका ने अपनी शर्तों में बदलाव कर दिया, जिससे कनाडा में बने वाहनों को मिलने वाली टैरिफ रियायतें कम हो जातीं और उसकी संप्रभुता पर भी असर पड़ता। उनके मुताबिक, दोनों देशों के बीच पुराने जैसे रिश्ते अब नहीं रहेंगे।

यूपीआई ग्राहकों की जेब सुरक्षित! एमडीआर का बोझ रोकने की तैयारी

आरबीआई के पुराने नियम का सहारा, डेबिट कार्ड मॉडल पर बनेगी नई नीति, छोटे दुकानदारों के लिए यूपीआई रहेगा मुफ्त

नई दिल्ली

देश में यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) का इस्तेमाल करने वाले करोड़ों लोगों के लिए एक अच्छी खबर है। सरकार और नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) एक ऐसी योजना पर काम कर रहे हैं, जिससे यूपीआई पर लागू होने वाले मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) का बोझ ग्राहकों की जेब पर न पड़े। इसके लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के उस पुराने नियम को आधार बनाया जा सकता है, जो डेबिट कार्ड से भुगतान पर दुकानदारों को ग्राहकों से अतिरिक्त शुल्क लेने से रोकता है। चूंकि यूपीआई पिछले छह सालों से मुफ्त है, इसलिए इस तरह के नियम की आवश्यकता नहीं पड़ी थी। लेकिन अब जब बड़े व्यापारियों पर शुल्क लगाने की चर्चाएं हो रही हैं, तो इस बात का डर है कि व्यापारी इसे ग्राहकों से वसूलना शुरू न कर दें। इसी आशंका को दूर करने के लिए एनपीसीआई अपने यूपीआई सर्कुलर में भी डेबिट कार्ड वाले नियम की तरह एक क्लॉज जोड़ने पर विचार कर रहा है। दिसंबर 2017 में आरबीआई ने डेबिट कार्ड के लेनदेन पर बैंकों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया था कि दुकानदार यह शुल्क ग्राहकों से न वसूलें। यूपीआई पर इस नियम को लागू कराने की अंतिम जिम्मेदारी आरबीआई की ही होगी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और पेमेंट्स काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) पहले ही यह स्पष्ट कर चुके हैं कि यदि यूपीआई पर एमडीआर लागू होता भी है, तो वह सिर्फ व्यापारियों के लिए होगा, आम ग्राहकों के लिए नहीं। इसके अलावा, छोटे दुकानदारों को इस दायरे से बाहर रखा जाएगा और उनके लिए यूपीआई सेवाएं मुफ्त ही रहेंगी।

गैजेट नोटिफिकेशन आने के बाद एनपीसीआई और यूपीआई स्टीयरिंग कमेटी मिलकर एमडीआर का ढांचा तय करेंगी। हालांकि, कागजों पर नियम बनाना आसान है, लेकिन इसे जमीन पर उतारना चुनौती भरा होगा। फिनटेक इंडस्ट्री से जुड़े लोगों का मानना है कि बैंकों के लिए इसे लागू कराना मुश्किल होगा। यदि कोई दुकानदार ग्राहक से जबरन शुल्क वसूलता है, तो बैंक तभी कार्रवाई करेंगे जब ग्राहक शिकायत दर्ज कराएगा।

भारत का दक्षिण अमेरिका पर फोकस, व्यापार विस्तार को वाणिज्य सचिव की हरी झंडी

चिली से वृहद समझौता, अर्जेंटीना व ब्राजील संग मर्कोसुर पीटीए विस्तार एजेंडे में

नई दिल्ली ।

भारत अपनी व्यापार विविधीकरण रणनीति के तहत दक्षिण अमेरिकी देशों के साथ आर्थिक संबंधों को गहरा करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसी क्रम में वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल 24 से 28 अगस्त तक चिली, अर्जेंटीना और ब्राजील की यात्रा करेंगे, जहां वे प्रमुख व्यापार समझौतों की समीक्षा और विस्तार पर चर्चा करेंगे। यह दौरा इन तेजी से बढ़ते बाजारों में भारत की पहुंच बढ़ाने की महत्वपूर्ण पहल है। यात्रा के दौरान अग्रवाल चिली के साथ प्रस्तावित वृहद आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) की प्रगति का मूल्यांकन करेंगे, जो अंतिम चरण में है। बाजार पहुंच और महत्वपूर्ण खनिज जैसे मुद्दे लंबित हैं। यह समझौता 2006 के तरजीही व्यापार समझौते का स्थान लेगा और डिजिटल सेवाओं व निवेश को भी शामिल करेगा। 2025-26 में भारत-चिली व्यापार 66.45 प्रतिशत बढ़कर 6.25 अरब डॉलर (रुपए) हो गया, जो सबसे तेज वृद्धि है। अर्जेंटीना और ब्राजील के साथ बैठकों में भारत-मर्कोसुर तरजीही व्यापार समझौते के दायरे को व्यापक बनाने पर विचार किया जाएगा, जिसमें वर्तमान में केवल लगभग 450 शुल्क लाइनें शामिल हैं।

ब्राजील के साथ विश्व व्यापार संगठन में चल रहे चीनी विवाद पर भी चर्चा की उम्मीद है। ये देश चीन पर निर्भरता कम करने के विकल्प तलाश रहे हैं, जिससे भारत के लिए नए व्यापारिक अवसर खुलेंगे। 2025-26 में अर्जेंटीना के साथ भारत का व्यापार 5.96 अरब डॉलर (रुपए) और ब्राजील के साथ 15 अरब डॉलर (रुपए) रहा। यह पहल नए बाजारों की तलाश और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने की भारत की व्यापक रणनीति का अहम हिस्सा है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आर्चरी प्रीमियर लीग खेलेंगी ओलंपिक मेडलिस्ट केसी कॉफहोल्ड, शामिल होंगे दुनिया के 12 स्टार तीरंदाज

नई दिल्ली, एजेंसी। हैदराबाद पेरिस 2024 ओलंपिक की ब्रॉन्ज मेडलिस्ट केसी कॉफहोल्ड (यूएसए) आर्चरी प्रीमियर लीग (एपीएल) के दूसरे सीजन में डेब्यू करेंगी। यह टूर्नामेंट 8 अक्टूबर से हैदराबाद में शुरू होगा, जिसमें 10 अलग-अलग देशों के 12 विदेशी तीरंदाज हिस्सा लेंगे। आर्चरी एसोसिएशन ऑफ इंडिया की इस लीग का दूसरा सीजन तेलंगाना सरकार के सहयोग से आयोजित किया जा रहा है। इसमें छह क्षेत्रीय फ्रेंचाइजी में बंटे 48 तीरंदाज हिस्सा लेंगे।

मौजूदा वर्ल्ड गेम्स इंडिविजुअल चैंपियन माइक श्लोसेर (वर्ल्ड नंबर 2) और एंड्रिया बेसेरा (वर्ल्ड नंबर 1) पहले सीजन के बाद फिर से वापसी करेंगे। सीजन 1 के स्टार और 2025 वर्ल्ड चैंपियनशिप के सिल्वर मेडलिस्ट मैथियास फुलरटन भी वापसी

करेंगे। इनके साथ मेक्सिको के 22 वर्षीय मटियास ग्रांडे (वर्ल्ड नंबर 3) और स्पेन की एलिया कैनेलेस भी 11 दिन तक चलने वाले इस टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे। 20 वर्षीय ओलंपिक मेडलिस्ट केसी कॉफहोल्ड उन खास खिलाड़ियों की लिस्ट में शामिल होंगी, जिनमें तुर्की के मेटे गाजोज और मेक्सिको की एलेजांद्रा वैलेंसिया जैसे ओलंपिक मेडलिस्ट शामिल हैं; ये दोनों खिलाड़ी लीग के पहले सीजन में भी खेले थे। कंपाउंड आर्चरी में वर्ल्ड नंबर 3 खिलाड़ी, कोलंबिया की एलेजांद्रा उस्कियानो, और ब्राजील के मार्कस डी'अल्मेडा - जो वर्तमान में दुनिया के नंबर 1 खिलाड़ी हैं और 2014 यूथ ओलंपिक खेलों में ब्रॉन्ज मेडलिस्ट रहे हैं - उन अन्य अंतरराष्ट्रीय तीरंदाजों में शामिल हैं जो हैदराबाद में एपीएल में डेब्यू करने जा रहे हैं।

अर्जुन तेंदुलकर के करियर का बड़ा फैसला इस टीम के साथ ही जारी रखेंगे घरेलू क्रिकेट

सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन तेंदुलकर के क्रिकेट करियर को लेकर अक्सर सवाल उठते रहे हैं। घरेलू क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद उनके इंटरनेशनल डेब्यू का इंतजार अब भी जारी है। 26 वर्षीय बाएं हाथ के तेज गेंदबाज अर्जुन ने अपने घरेलू क्रिकेट करियर की शुरुआत मुंबई से की थी, लेकिन 2022-23 सीजन से पहले उन्होंने गोवा का रुख कर लिया। तब से वह गोवा की टीम का अहम हिस्सा बने हुए हैं। हाल ही में गोवा के ओमान दौरे पर अर्जुन के नहीं जाने के बाद उनके भविष्य को लेकर चर्चाएं तेज हो गई थीं। हालांकि, अब अर्जुन ने गोवा के साथ अपने सफर को जारी रखने का फैसला किया है।

अर्जुन तेंदुलकर ने गोवा के लिए लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है। वह टीम के नियमित सदस्य रहे हैं और फर्स्ट क्लास क्रिकेट में 50 से ज्यादा विकेट अपने नाम कर चुके हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी बल्लेबाजी पर भी काफी काम किया है। रणजी ट्रॉफी में राजस्थान के खिलाफ अर्जुन ने शानदार शतक भी लगाया था। इस प्रदर्शन के बाद अर्जुन की पहचान सिर्फ सचिन तेंदुलकर के बेटे के रूप में नहीं, बल्कि एक ऑलराउंडर क्रिकेटर के तौर पर भी मजबूत हुई है। गोवा की टीम ने उन्हें लगातार खेलने और गेंदबाजी के साथ साथ बल्लेबाजी में अपनी क्षमता दिखाने का मौका दिया है। ऐसे में गोवा के साथ बने रहना उनके करियर के लिए अहम फैसला माना जा रहा है।

अर्जुन तेंदुलकर को IPL 2026 में लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम का हिस्सा बनने का मौका मिला। हालांकि, पूरे सीजन उन्हें प्लेइंग इलेवन में जगह बनाने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। आखिरकार सीजन के आखिरी मुकाबले में उन्हें पंजाब किंग्स के खिलाफ मैदान पर उतरने का मौका मिला। इस मुकाबले में अर्जुन ने अपनी गेंदबाजी से प्रभावित किया। उन्होंने चार ओवर में 36 रन देकर एक विकेट हासिल किया। उनकी गेंदबाजी में खास तौर पर यॉर्कर देखने को मिलीं।

संक्षिप्त समाचार

2000 से ज्यादा ह्यूमनॉइड रोबोट दिखा रहे इंसानों जैसा करतब; हैरान हुए दर्शक

बीजिंग , एजेंसी। बीजिंग में दूसरे वर्ल्ड ह्यूमनॉइड रोबोट गेम्स यानी 'रोबोट ओलंपिक' की शुरुआत हो गई है। पांच दिन चलने वाले इस आयोजन में 16 देशों की 650 से अधिक टीमें हिस्सा ले रही हैं। 2,000 से ज्यादा ह्यूमनॉइड रोबोट फुटबॉल, टेनिस, बॉक्सिंग, बैडमिंटन और एथलेटिक्स जैसे खेलों में अपनी क्षमता दिखा रहे हैं। चीन की राजधानी बीजिंग में शनिवार से दूसरे वर्ल्ड ह्यूमनॉइड रोबोट गेम्स (रोबोट ओलंपिक) की शुरुआत हो गई है। इस पांच दिवसीय आयोजन में 16 देशों के 650 से अधिक टीमों के 2,000 से ज्यादा ह्यूमनॉइड रोबोट हिस्सा ले रहे हैं। ह्यूमनॉइड के इस ओलंपिक में रोबोट्स के बीच दौड़, फुटबॉल, टेबल टेनिस, एथलेटिक्स, किकबॉक्सिंग जैसे विभिन्न खेल मुकाबले व औद्योगिक गतिविधियां हो रही हैं। पहले दिन 4,00 मीटर और 1,500 मीटर जैसी दौड़ पूरी तरह से स्वायत्त श्रेणी में हुई, जहां रोबोट्स बिना रिमोट कंट्रोल के दौड़े। वी आर चाइना की रिपोर्ट्स के मुताबिक, उद्घाटन के मौके पर रोबोट्स ने किसी आर्मी परेड की तरह बिल्कुल एक कतार और तालमेल में मार्च-पास्ट किया। चीनी ह्यूमनॉइड रोबोट गैलबॉट ने जब लॉन टेनिस के लिए जोरदार डाइव लगाई तो यह नजारा देख दर्शक हैरान रह गए।

मान्सी लाथर ने जीता रजत, तन्वी और कोमल ने कांस्य पदक पर जमाया कब्जा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय महिला पहलवानों ने अंडर-20 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन पदक जीते। मान्सी लाथर ने 68 किग्रा में रजत, जबकि तन्वी मगदूम और कोमल ने 57 व 59 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक हासिल किया। भारतीय महिला पहलवानों ने अंडर-20 विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन और पदक अपने नाम कर लिए। मान्सी लाथर ने 68 किलोग्राम भारवर्ग में रजत पदक जीता, जबकि तन्वी मगदूम और कोमल ने क्रमशः 57 और 59 किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक हासिल किए।

मंसी लाथर को रजत पदक

68 किलोग्राम भारवर्ग के स्वर्ण पदक मुकाबले में मान्सी लाथर को चीन की चेनलिंग सॉन्ग के खिलाफ बेहद करीबी मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा। मान्सी को इस मुकाबले में 1-2 से शिकस्त मिली। इस तरह उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा।

तन्वी ने 10-4 से दर्ज की जीत

57 किलोग्राम भारवर्ग के कांस्य पदक मुकाबले में तन्वी मगदूम ने कनाडा की अग्निया क्राकोव्स्का को 10-4 से हराया। इस जीत के साथ तन्वी ने प्रतियोगिता में कांस्य पदक अपने नाम किया।

बायर्न म्यूनिख ने जीता खिताब, फाइनल में बोरुसिया डॉर्टमुंड को 2-1 से हराया

डॉर्टमुंड, एजेंसी। बायर्न म्यूनिख ने बोरुसिया डॉर्टमुंड को 2-1 से हराकर सीजन का पहला जर्मन सुपरकप (फ्रांज बेकनबाउर सुपरकप) जीता। जमाल मुसियाला और सर्ज ग्नाब्री के बाहर होने पर, बायर्न के कोच विंसेंट कोम्पनी ने नए खिलाड़ी डिफेंडर नैथेनियल ब्राउन को नंबर 10 रोल में भेजा। 23 साल के खिलाड़ी ने 28वें मिनट में गोल करके कोच के भरोसे को सही साबित किया। जोशुआ किमिच ने माइकल ओलिस की ओर एक लंबी गेंद भेजी, जिन्होंने एरिया के किनारे पर डॉर्टमुंड के डिफेंस को रोककर ब्राउन को बॉल दी। जर्मनी के इंटरनेशनल खिलाड़ी ने कोई गलती नहीं की, और गोलकीपर ग्रेगर कोबेल को छकाते हुए बायर्न के लिए अपना पहला प्रतियोगी गोल किया। पहले हाफ के स्टॉपेज टाइम में विजिटर्स ने अपनी बढ़त दोगुनी कर ली। जोबे बेलिंगहैम ने अपने ही हाफ में पजेशन खो दिया। ओलिस गेंद लेकर पेनल्टी एरिया में दौड़े और शांति से कोबेल के पार नीचे-बाएं कोने में गोल कर दिया। ब्रेक के बाद डॉर्टमुंड ने कई अटैकिंग सब्स्टीट्यूशन किए और 75वें मिनट में उन्हें इसका इनाम मिला जब सब्स्टीट्यूट फैबियो सिल्वा ने गोल किया। आखिरी स्टेज में दोनों टीमों ने तेजी से काउंटरअटैक किए। मैक्सिमिलियन बेयर के पास बराबरी करने का अच्छा मौका था लेकिन उन्होंने एक शॉट ऊपर मार गोल का मौका गंवा दिया और बायर्न ने जीत पक्की कर ली। इस जीत ने बायर्न को रिकॉर्ड 12वां सुपरकप टाइटल दिलाया। डॉर्टमुंड ने यह कॉम्पिटिशन छह बार जीता है। 2026-27 बुंडेसलीगा सीजन 28 अगस्त से शुरू होगा। डिफेंडिंग चैंपियन बायर्न वीएफबी स्टटगार्ट की मेजबानी करेगा। डॉर्टमुंड अगले दिन हैमबर्गर एसवी के खिलाफ अपने घरेलू मैदान पर अपना लीग कैंपेन शुरू करेगा। मैच के बाद न्यूएर ने कहा, 'अब टीम के साथ इस सीजन का मजा लेने का समय है, और फिर हम देखेंगे। लेकिन हां, यह हो सकता है कि यह आखिरी सीजन हो। न्यूएर के बयान को उनके भविष्य में संभावित बदलाव के संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

स्टार्क की आंधी में उड़ा बांग्लादेश

ऑस्ट्रेलिया ने 2 दिन के अंदर जीत लिया मैके टेस्ट, सीरीज 1-1 से बराबर

नईदिल्ली, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया और बांग्लादेश के बीच टेस्ट सीरीज का दूसरा एवं आखिरी मुकाबला मैके के ग्रेट बैरियर रीफ एरिना में खेला गया. इस मुकाबले में मेजबान ऑस्ट्रेलिया ने बांग्लादेश को पारी और 51 रनों से हरा दिया. इस जीत के साथ ही ऑस्ट्रेलिया ने टेस्ट सीरीज को 1-1 से बराबरी पर खत्म किया. पहला टेस्ट डार्विन में खेला गया था, जहां ऑस्ट्रेलियाई टीम को 9 विकेट से शिकस्त झेलनी पड़ी थी. अब कंगारुओं ने उस हार का बदला दमदार तरीके से लिया है.

मैके टेस्ट मैच का नतीजा दो दिन के अंदर आ गया. दूसरे दिन (23 अगस्त) चायकाल के कुछ देर बाद ही ऑस्ट्रेलियाई टीम ने मैदान मार लिया. मैके टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलियाई टीम की जीत के हीरो तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क रहे. बाएं हाथ के दिग्गज गेंदबाज स्टार्क ने बांग्लादेश की दूसरी पारी में चार विकेट झटके. स्टार्क ने पहली पारी में छह विकेट चटकाए थे. यानी उन्होंने मुकाबले में कुल 10 विकेट अपने नाम किए. स्टार्क को 'प्लेयर ऑफ द मैच' और 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' चुना गया.

मिचेल स्टार्क की तूफानी गेंदबाजी के चलते बांग्लादेश अपनी दूसरी पारी में 95 रनों पर ढेर हो गया. बांग्लादेश के लिए दूसरी पारी में कप्तान नजमुल हुसैन शांतो ने सबसे ज्यादा 31 रन बनाए. वहीं मुश्फिकुर रहीम 29 रन बनाकर नाबाद रहे. बाकी के 9 बल्लेबाज तो दोहरे अंकों तक नहीं पहुंच पाए, जिनमें तीन का खाता तक नहीं खुला. कप्तान पैट कमिंस और नाथन लायन ने तीन-तीन विकेट लेकर स्टार्क का अच्छा साथ निभाया.

शोरिफुल की मेहनत बेकार गई

इससे पहले ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 210 रनों पर सिमट गई थी. पहली पारी के आधार पर ऑस्ट्रेलिया को 146 रनों की लीड मिली. कैमरन ग्रीन ने 10 चौके की मदद से 105 बॉल पर 67 रन बनाए. वहीं स्टीव स्मिथ (42 रन) और नाथन लायन (नाबाद 32 रन) ने भी उपयोगी पारियां खेलीं. बांग्लादेश के लिए लेफ्ट आर्म पेसर शोरिफुल इस्लाम ने 7 विकेट लिए. जबकि तैजुल इस्लाम, मेहदी हसन मिराज और तस्कीन अहमद को एक-एक विकेट मिले.

पुर्तगाली फुटबॉलर क्यूविन कास्त्रो की मौत:मैदान पर गिरे, अस्पताल में तोड़ा दम

नईदिल्ली, एजेंसी। पुर्तगाल के 25 साल के फुटबॉलर क्यूविन कास्त्रो की मैच के दौरान मैदान पर गिरने के बाद मौत हो गई। वह शनिवार को लिस्बन में प्री-सीजन फ्रेंडली मैच खेल रहे थे। इस घटना के बाद मैच स्थगित कर दिया गया। लिस्बन फुटबॉल एसोसिएशन ने उनके निधन की पुष्टि की। कास्त्रो पुर्तगाल में चौथे डिवीजन की लीग में खेलने वाली टीम रियल स्पोर्ट क्लब का हिस्सा थे। मुकाबला एस्ट्रेला डि अमाडोरा नाम की टीम से हो रहा था।

22वें मिनट में मैदान पर गिरे, अस्पताल ले जाया गया

कास्त्रो मैच के 22वें मिनट में मैदान पर गिर पड़े। उनके गिरने के बाद मेडिकल टीम ने तुरंत इलाज शुरू किया। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मौत की पुष्टि हुई। कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक, मैदान पर उन्हें बिजली का झटका देकर होश में लाने की कोशिश भी की गई।

वैभव सूर्यवंशी ने दलीप ट्रॉफी डेब्यू पर किया निराश... 2 चौके जड़े, फिर इस अनजान गेंदबाज ने फंसाया

नई दिल्ली, एजेंसी। 15 साल के वैभव सूर्यवंशी के लिए दलीप ट्रॉफी का डेब्यू उम्मीदों के मुताबिक नहीं रहा. नॉर्थ ईस्ट जोन के खिलाफ क्वार्टर फाइनल में वैभव ईस्ट जोन की ओर से पहली पारी में महज 8 रन बनाकर आउट हो गए. उन्होंने लगातार दो चौके लगाकर इंटेंट दिखाया था, लेकिन इस आक्रामक अंदाज को ज्यादा देर तक बरकरार नहीं रख सके. बेंगलुरु स्थित (भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड) के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ग्राउंड-2 पर खेले जा रहे मुकाबले में नॉर्थ ईस्ट जोन ने टॉस जीतकर ईस्ट जोन को पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया था. नई गेंद से तेज गेंदबाजों को मदद मिल रही थी और ईस्ट जोन ने शुरुआत में ही विकेट गंवा दिया. वैभव सूर्यवंशी ने अपने दलीप ट्रॉफी करियर की शुरुआत बिल्कुल उसी अंदाज में की, जिसके लिए वह पहचाने जाते हैं. पारी के दूसरे ओवर में बिश्वोरजीत कोंथौजम की तीसरी गेंद को कवर रीजन से उन्होंने बाउंड्री के पार पहुंचाया. अगली गेंद पर भी उन्होंने कवर ड्राइव लगाकर चौका बटोरा. हालांकि गेंदबाज ने जल्द ही उनकी आक्रामकता का जवाब ढूंढ लिया. आखिरी गेंद पर वैभव सूर्यवंशी ने एक और बार कवर ड्राइव खेलने की कोशिश की, लेकिन इस बार टाइमिंग सही नहीं रही. गेंद बल्ले का किनारा लेकर गली में पहुंची, जोसेफ लालथनखुमा ने कैच लपक लिया. इस तरह वैभव की पहली दलीप ट्रॉफी पारी 6 गेंदों में 8 रनों पर समाप्त हुई. बिश्वोरजीत कोंथौजम ने लगातार दो चौके खाने के बावजूद अपना संयम बनाए रखा और ओवर की आखिरी गेंद पर युवा बल्लेबाज को पवेलियन भेजकर हिसाब बराबर कर लिया.

देवदत्त पडिक्कल ने लगातार दूसरे टेस्ट में भी शतक लगाया, नंबर-3 पर खत्म की भारत की टेंशन

कोलंबो (एजेंसी)। श्रीलंका के खिलाफ कोलंबो के सिंहलीज स्पोर्ट्स क्लब में खेले जा रहे दूसरे टेस्ट में भारत ने 4 विकेट पर 291 रन बनाए हैं। देवदत्त पडिक्कल ने लगातार दूसरे टेस्ट में शतक लगाया है। वह 117 रन बनाकर आउट हो गए। वहीं रवींद्र जडेजा फिफ्टी के करीब थे। पडिक्कल ने पहले टेस्ट की पहली पारी में 167 और दूसरी पारी में 44 रन बनाए थे।

इससे पहले कप्तान शुभमन गिल 50 रन बनाकर आउट हुए। केएल राहुल 18 और यशस्वी जायसवाल 45 रन बनाकर पवेलियन लौटे थे। ऋषभ पंत 3 रन बनाकर रिटायर्ड हर्ट हुए। उन्हें लाहिरू कुमारा की शॉर्ट गेंद बाएं हाथ की कलाई पर लगी थी।

भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया है। गॉल में पहला टेस्ट 165 रन से जीतकर भारतीय टीम सीरीज में 1-0 से आगे है।

संयम भरी पारी और कप्तान गिल के साथ अहम साझेदारी

पडिक्कल ने इस पारी में गजब का धैर्य और संयम दिखाया। उन्होंने बिना कोई जोखिम उठाए बेहद आराम से बल्लेबाजी की और 168 गेंदों का सामना करते हुए अपना शतक पूरा किया। अपनी इस शतकीय पारी के दौरान उन्होंने एक भी छक्का नहीं लगाया और 10 चौके जड़े। उन्होंने कप्तान शुभमन गिल के साथ मिलकर एक मजबूत साझेदारी निभाई, जिसकी बदौलत भारतीय टीम मैच में काफी मजबूत और संभली हुई स्थिति में पहुंच गई है। टीम इंडिया ने इस मैच में सिर्फ 66 रन पर अपने दो विकेट खो दिए थे। इसके बाद शुभमन गिल और देवदत्त पडिक्कल ने बीच तीसरे विकेट के लिए 120 रनों की अहम साझेदारी हुई।

पिछले काफी समय से भारतीय टेस्ट टीम नंबर-3 के स्थान पर एक ऐसे भरोसेमंद बल्लेबाज की तलाश में थी, जो तेज और स्पिन गेंदबाजी दोनों का मजबूती से सामना कर सके। पडिक्कल ने लगातार दो शतकों के साथ इस समस्या को लगभग पूरी तरह से

सुलझा दिया है। जिस तरह से वे स्पिन और पेस अटैक के खिलाफ आसानी से रन बना रहे हैं, उससे उन्होंने तीसरे नंबर पर अपनी जगह काफी हद तक पक्की कर ली है।पडिक्कल के इस निरंतर शानदार प्रदर्शन ने उन खिलाड़ियों के लिए राह कठिन कर दी है जो लंबे समय से नंबर-3 की रेस में बने हुए थे। इनमें सबसे प्रमुख नाम साई सुदर्शन का है। गौरतलब है कि साई सुदर्शन के चोटिल होने के बाद ही देवदत्त पडिक्कल को भारतीय टेस्ट स्क्वॉड में शामिल होने का मौका मिला था।

संक्षिप्त समाचार

5 साल की हिंद रजब जिस कार में थी, उस पर सैनिकों ने 355 गोलियां बरसाई थीं

यरुशलम/काहिरा, एजेंसी। इस्राइली सेना ने 934 दिन बाद पहली बार स्वीकारा है कि जनवरी 2024 में गाजा में पांच साल की फलस्तीनी बच्ची हिंद रजब और उसके परिवार को ले जा रही कार पर उसके सैनिकों ने ही गोलियां चलाई थीं। सैनिकों ने हिंद और उसके परिवार की कार पर 355 गोलियां चलाई थीं। यह घटना दुनियाभर में गहरा आक्रोश पैदा कर चुकी है और अब सेना ने इस मामले में आपराधिक जांच के आदेश दे दिए हैं। 29 जनवरी 2024 को गाजा शहर के तेल अल-हावा इलाके में हिंद रजब अपने छह परिजनों के साथ एक कार में यात्रा कर रही थी, तभी इस्राइली सेना ने कार पर गोलीबारी कर दी। हिंद और उसकी चचेरी बहन लायन को छोड़कर बाकी सभी की मौके पर ही मौत हो गई। लायन ने फलस्तीन रेड क्रिसेंट सोसाइटी की आपात सेवा को फोन किया और गोलियों व चीख-पुकार के बीच हालात बताती रही, तभी कॉल कट गई। इसके बाद हिंद ने खुद एक कॉल का जवाब दिया और अरबी भाषा में ऑपरेटर से कहा, टैंक मेरे बगल में है...डर लग रहा है, प्लीज आ जाओ। फिर गोलियों की आवाज गूंजी और कॉल अचानक कट गई। एजेंसी फलस्तीन रेड क्रिसेंट सोसाइटी ने बच्चों को बचाने के लिए एक एंबुलेंस भी भेजी। इसकी जानकारी पहले ही इस्राइली सेना को दे दी गई। इसके बावजूद, इस्राइली सेना ने एंबुलेंस पहुंचने के बाद उस पर भी एक गोला दागा, जिसमें दो पैरामेडिक्स की मौके पर ही मौत हो गई।

ट्रंप के खास एड मार्टिन की जस्टिस डिपार्टमेंट से विदाई- राष्ट्रपति ने दी नई जिम्मेदारी; क्या होगी नई भूमिका

वाशिंगटन, एजेंसी। एड मार्टिन ट्रंप प्रशासन में कई विवादित भूमिकाएं निभाने के बाद जस्टिस डिपार्टमेंट से विदा हो रहे हैं। ट्रंप के अनुसार, अब मार्टिन 2026 के मिड-टर्म और 2028 के राष्ट्रपति चुनावों से जुड़ी कानूनी लड़ाइयों पर ध्यान देंगे। उनकी विदाई ऐसे समय हुई है जब ट्रंप प्रशासन चुनावी प्रक्रिया, गैर-नागरिकों के मतदान और संघीय सरकार की चुनावों में भूमिका को लेकर सक्रिय है। मार्टिन का ट्रंप के चुनावी आंदोलन और 6 जनवरी की घटनाओं से जुड़ा पुराना संबंध भी उन्हें इस राजनीतिक लड़ाई का महत्वपूर्ण चेहरा बनाता है। ट्रंप ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में बताया कि मार्टिन जस्टिस डिपार्टमेंट में 'पार्डन अटॉर्नी' यानी राष्ट्रपति की माफी से जुड़े मामलों के वकील का पद छोड़ रहे हैं। अब वह इस साल होने वाले मिड-टर्म चुनाव और 2028 के राष्ट्रपति चुनाव से जुड़ी 'कानूनी लड़ाइयों' पर ध्यान केंद्रित करेंगे। ट्रंप ने लिखा, मुझे पता है कि वह बहुत अच्छा काम करेंगे। वह यह सुनिश्चित करेंगे कि चुनाव स्वतंत्र, निष्पक्ष और ईमानदार हों तथा हमारे संवैधानिक अधिकारों को मजबूती से आगे बढ़ाएंगे। पिछले साल डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया के लिए अंतरिम अमेरिकी अटॉर्नी नियुक्त किए जाने के बाद से ही मार्टिन ट्रंप प्रशासन में विवादों के केंद्र में रहे। इस पद पर रहते हुए उन्होंने ट्रंप की ओर से 6 जनवरी की घटनाओं से जुड़े आरोपियों को बड़े पैमाने पर माफी दिए जाने के बाद उन मामलों को समाप्त करने की प्रक्रिया की निगरानी की थी।

ट्रंप को भी हद दिखाने वाली मेलोनी, तीन फीसदी वोट से सत्ता तक पहुंचीं; अब बना रहीं नया रिकॉर्ड

रोम, एजेंसी। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी इन दिनों अपने राजनीतिक सफर की वजह से चर्चा में हैं। वह न सिर्फ अपनी सरकार को लगातार मजबूत बनाए रखने में सफल रही हैं, बल्कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जैसे ताकतवर नेता को भी कई मौकों पर दो टूक जवाब दे चुकी हैं। मेलोनी 4 सितंबर को इटली गणराज्य यानी 1946 के बाद सबसे लंबे समय तक लगातार प्रधानमंत्री रहने का रिकॉर्ड बनाने जा रही हैं। उनका यह सफर इसलिए भी खास है, क्योंकि जिस पार्टी को उन्होंने खड़ा किया था, वह कभी सिर्फ 3 फीसदी वोट पर अटकी रहती थी। मेलोनी और ट्रंप के बीच कई मौकों पर मतभेद सामने आए हैं। ट्रंप ने एक बार आरोप लगाया था कि जी-7 शिखर सम्मेलन में मेलोनी उनके साथ तस्वीर खिंचवाने के लिए गिड़गिड़ाई थीं। इस पर मेलोनी ने जवाब दिया कि इटली कभी किसी के आगे भीख नहीं मांगता। जब ट्रंप ने वेटिकन के पोप पर निशाना साधा, तब भी मेलोनी ने साफ कहा कि इटली में कई मुद्दों पर बहस हो सकती है, लेकिन पोप का अपमान स्वीकार नहीं किया जाएगा। कभी ट्रंप के शपथ ग्रहण में शामिल होने वाली इकलौती यूरोपीय राष्ट्राध्यक्ष रहीं मेलोनी अब वाशिंगटन से बातचीत को लेकर अलग रुख अपना रही हैं। तीन फीसदी वोट वाली पार्टी सत्ता तक कैसे पहुंची मेलोनी का राजनीतिक सफर बेहद कम उम्र में शुरू हुआ।

नवाज शरीफ की 2019 वाली स्क्रिप्ट दोहरा रहे इमरान, क्या सरकार के साथ इलाज के नाम पर हो चुकी है डील

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान की राजनीति में जेल, अदालत और सत्ता का रिश्ता हमेशा बेहद उलझा हुआ रहा। अब पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के स्वास्थ्य को लेकर पैदा हुआ नया विवाद इसी पुराने राजनीतिक पैटर्न की याद दिला रहा है। 18 अगस्त 2026 को पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने जेल में बंद इमरान खान को अस्पताल ले जाने का आदेश दिया। इसके दो दिन बाद सरकार ने संकेत दिया कि अगर जरूरत पड़ी तो उन्हें इलाज के लिए विदेश भी भेजा जा सकता है, लेकिन इसके लिए कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होगा। यही वजह है कि 2019 का नवाज शरीफ प्रकरण फिर चर्चा में आ गया। उस समय भी मामला जेल में बंद एक पूर्व प्रधानमंत्री की बिगड़ती सेहत से शुरू हुआ था। मेडिकल आधार पर राहत मिलने के बाद नवाज शरीफ को इलाज के लिए लंदन जाने की अनुमति मिली थी। उनकी मौजूदा चिकित्सा स्थिति तथा कानूनी स्थिति अलग है। इसलिए सवाल डील का कम और पाकिस्तान की उस राजनीतिक परंपरा का ज्यादा है। इसमें जेल में बंद बड़े नेताओं को स्वास्थ्य के आधार पर राहत मिलने के बाद सियासी समीकरण बदलते रहे हैं। चलिए पहले इतिहास में चलते हैं और जानते हैं कि नवाज शरीफ के साथ क्या हुआ था।

2019 में नवाज शरीफ के साथ क्या हुआ था : नवाज शरीफ उस समय भ्रष्टाचार के एक मामले में

जेल की सजा काट रहे थे। उनकी तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया और मेडिकल आधार पर राहत का रास्ता खुला। फरवरी 2019 में इस्लामाबाद हाईकोर्ट ने मेडिकल आधार पर उनकी जमानत याचिका खारिज की थी, लेकिन बाद के महीनों में उनकी स्वास्थ्य स्थिति को लेकर मामला फिर गंभीर हुआ। अक्तूबर-नवंबर 2019 में उन्हें मेडिकल आधार पर जमानत मिली और इलाज के लिए विदेश जाने का रास्ता तैयार हुआ। नवंबर 2019 में पाकिस्तान सरकार ने नवाज शरीफ को इलाज के लिए चार सप्ताह के लिए विदेश जाने की एक बार की अनुमति दी थी। सरकार ने इसके लिए एक क्षतिपूर्ति बांड की शर्त भी रखी थी। बाद में लाहौर हाईकोर्ट के आदेश के बाद विदेश जाने की प्रक्रिया आगे बढ़ी और नवाज शरीफ लंदन चले गए। उनके साथ उस समय उनके भाई शहबाज शरीफ भी थे। यानी 2019 का घटनाक्रम सीधे तौर पर जेल से शुरू होकर मेडिकल जांच, अदालत की राहत और फिर विदेश में इलाज तक पहुंचा था। आज इमरान खान के मामले में भी जेल से अस्पताल और फिर संभावित विदेश इलाज की बात सामने आई है। यही समानता दोनों मामलों को एक साथ देखने की वजह बन रही है।

क्या सरकार सच में इमरान को विदेश भेज सकती है : यही इस पूरे मामले का सबसे अहम सवाल है। 20 अगस्त को पाकिस्तान सरकार ने संकेत दिया कि अगर इमरान खान के इलाज के लिए जरूरत पड़ी तो उन्हें विदेश भेजने की संभावना पर विचार किया जा सकता है। हालांकि सरकार ने साफ किया कि इसके लिए कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होगा। यानी अभी ऐसा कोई फैसला नहीं हुआ है कि इमरान खान को लंदन या किसी दूसरे देश भेजा जा रहा है। सरकार की बात इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि जेल में बंद किसी बड़े राजनीतिक नेता को विदेश इलाज के लिए भेजना केवल मेडिकल फैसला नहीं रहता। इसमें अदालत, जेल प्रशासन, सरकार और सुरक्षा एजेंसियों की भूमिका भी जुड़ जाती है। नवाज शरीफ के मामले में भी विदेश जाने के लिए अदालत और सरकार के स्तर पर कई कानूनी कदम उठे थे। उनके लिए पहले मेडिकल आधार पर राहत मिली और फिर विदेश जाने की अनुमति की प्रक्रिया पूरी हुई थी। इसलिए इमरान के मामले में अभी सबसे सही बात यही है कि विदेश इलाज का विकल्प खुला बताया गया है, लेकिन उसे अंतिम फैसला नहीं माना जा सकता। अगर आगे अदालत या सरकार की ओर से औपचारिक अनुमति मिलती है, तभी इसे नवाज शरीफ वाले घटनाक्रम की अगली कड़ी माना जा सकेगा।

क्या इमरान और नवाज के मामलों में सचमुच समानता है : दोनों मामलों में पहली बड़ी समानता यह है कि दोनों पूर्व प्रधानमंत्री जेल में थे और स्वास्थ्य को लेकर गंभीर सवाल उठे। दोनों मामलों में मेडिकल जांच और अदालत की भूमिका सामने आई। दोनों मामलों में विदेश में इलाज की संभावना भी चर्चा में आई। लेकिन दोनों की कानूनी स्थिति बिल्कुल समान नहीं है। नवाज शरीफ को 2019 में विदेश जाने की अनुमति एक तय प्रक्रिया के तहत मिली थी, जबकि इमरान खान के मामले में अभी सरकार ने केवल जरूरत पड़ने पर विदेश इलाज की संभावना जताई है। दूसरी बड़ी बात यह है कि इमरान के खिलाफ इस समय भी कई कानूनी मामले और अपीलें चल रही हैं। एक मामले में वह 14 साल की सजा काट रहे हैं, जबकि कई अन्य मामलों में सजा निलंबित या फैसले पलटे जा चुके हैं। ऐसे में विदेश जाना केवल स्वास्थ्य का मामला नहीं होगा। यह कानूनी अनुमति और उनकी हिरासत की स्थिति से भी जुड़ा होगा। यही कारण है कि इमरान खान के समर्थक इसे राहत की शुरुआत के रूप में देख सकते हैं।

होर्मुज को लेकर यूएस कर रहा क्या तैयारी: इधर ट्रंप ने दी ईरान को धमकी, उधर रूबियो ने की ओमान को साधने की कोशिश

वॉशिंगटन, एजेंसी। पश्चिम एशिया में अमेरिका और ईरान के बीच होर्मुज जलडमरूमध्य पर नियंत्रण बनाने को लेकर तनाव चरम पर है। इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार (स्थानीय समय) को कहा कि ईरान समझौता करना चाहता है, लेकिन उनके अनुसार वह सही डील के लिए अभी तैयार नहीं है। उन्होंने दोनों देशों के बीच बढ़ते तनाव के बीच क्षेत्र के महत्वपूर्ण इलाकों पर अमेरिका के नियंत्रण का दावा भी दोहराया। ट्रंप ने कहा कि ईरान के खिलाफ आर्थिक कदमों का यह मतलब नहीं है कि अमेरिका के पास सैन्य विकल्प सीमित हो गए हैं। ट्रंप ने कहा, नहीं, बिल्कुल नहीं। इसका सिर्फ मतलब है कि हम देख रहे हैं कि क्या होता है। उनके पास पैसा नहीं है, उनके पास नौसेना नहीं है, उनके पास वायुसेना नहीं है, वे अपने सैनिकों को वेतन नहीं दे रहे हैं, वे अपनी पुलिस को वेतन नहीं दे रहे हैं, वहां 350 प्रतिशत महंगाई है।

ट्रंप ने दोहराया होर्मुज पर नियंत्रण का दावा : अमेरिकी राष्ट्रपति ने आगे कहा, हम बस यह देखेंगे कि क्या होता है और जैसा कि आप जानते हैं, सीमा पर हमारा पूरा नियंत्रण है। हमारे पास पूरी तरह नियंत्रण है। अगर आप नाकाबंदी को देखें, तो हमारे पास होर्मुज जलडमरूमध्य से जुड़े पूरे क्षेत्र पर पूरा नियंत्रण है। ट्रंप ने कहा कि ईरान समझौते में रुचि रखता है, लेकिन उसने अभी तक उन शर्तों को स्वीकार नहीं किया है, जिन्हें वॉशिंगटन चाहता

है। उन्होंने कहा, तो वे समझौता करना चाहते हैं, लेकिन मेरी राय में वे सही डील करने के लिए तैयार नहीं हैं। ट्रंप का यह बयान वॉशिंगटन और तेहरान के बीच जारी तनाव के बीच आया है। ट्रंप ने हाल ही में ईरान के खिलाफ अब तक का सबसे बड़ा आर्थिक अभियान शुरू करने की घोषणा की थी। उन्होंने ईरान को वित्तीय, कारोबारी या सरकारी समर्थन देने वाले देशों को बहुत गंभीर आर्थिक परिणाम भुगतने की चेतावनी दी थी। इस बीच अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने वॉशिंगटन में अमेरिका में ओमान के राजदूत तलाल अल रहबी से मुलाकात की। दोनों ने आपसी हित के मुद्दों पर चर्चा की और दोनों देशों के बीच मजबूत सहयोग को दोहराया। ओमान के दूतावास ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, महामहिम राजदूत तलाल अल रहबी ने वाशिंगटन डीसी में इंस्टीट्यूट ऑफ पीस में अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम से इतर अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो से मुलाकात की।

कनाडा पर फूटेगा ट्रंप का टैरिफ बम: यूएस के साथ व्यापार वार्ता नाकामयाब, कनाडाई उत्पादों पर लगेगा 50 प्रतिशत शुल्क

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका शनिवार तड़के कनाडा के करीब 20 अरब डॉलर मूल्य के उत्पादों पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाने वाला है। आखिरी समय में हुई बातचीत के बावजूद दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते को लेकर सहमति नहीं बन सकी। इससे पहले से तनावपूर्ण संबंधों में और खटास बढ़ गई है। अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जैमीसन ग्रीर ने शनिवार आधी रात से कुछ देर पहले पत्रकारों के साथ एक कॉल में पढ़े गए बयान में कहा, कनाडा ने इस सप्ताह की शुरुआत में तय शर्तों के तहत व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने से इनकार कर दिया। अमेरिका ने कनाडा को हमारे बाजार में किसी भी बड़े निर्यातक के मुकाबले सबसे बेहतर शर्तें देने की पेशकश की थी। इसके बावजूद कनाडा की नई मांगों और कुछ अन्य प्रतिबद्धताओं से पीछे हटने के कारण पिछले कुछ दिनों में बनाई गई संतुलित व्यवस्था बिगड़ गई।

व्यापार समझौते को लेकर क्या बोले मार्क कार्नी : कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने जवाब दिया, अमेरिका की प्रस्तावित शर्तों में आखिरी समय में किए गए बदलाव अनुचित और आर्थिक रूप से नुकसानदेह थे। उन्होंने किसी भी समझौते की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े कर दिए। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से लगाए जाने वाले आयात शुल्क से कनाडा से अमेरिका भेजे जाने वाले कुल उत्पादों में से करीब पांच प्रतिशत प्रभावित होंगे। इनमें हॉकी स्टिक से लेकर जीभ की जांच में इस्तेमाल होने वाली लकड़ी की छोटी छड़ियां तक शामिल हैं।

तीन दिन की समय सीमा बढ़ी, फिर भी नहीं बनी बात हालांकि, इसका राजनीतिक असर आर्थिक नुकसान से भी बड़ा होने की संभावना है। पिछले साल दोनों देशों के बीच करीब 880 अरब डॉलर मूल्य की वस्तुओं और सेवाओं का कारोबार हुआ था। इन शुल्कों को शुरुआत में बुधवार रात 12 बजकर 1 मिनट से लागू किया जाना था। लेकिन ट्रंप ने बातचीत जारी रखने के लिए समय सीमा तीन दिन बढ़ा दी थी। इसके बावजूद दोनों देश तय समय तक किसी समझौते पर नहीं पहुंच सके।

कनाडा के गुरुद्वारे में चाकूबाजी- सुबह की अरदास के दौरान मचा हंगामा; दो लोग घायल, पीएम कार्नी ने जताई संवेदनाएं

टोरंटो, एजेंसी। कनाडा के अल्बर्टा प्रांत के एडमंटन स्थित नानकसर गुरसिख गुरुद्वारा में शादी समारोह से पहले सुबह की प्रार्थना के दौरान एक व्यक्ति ने कथित तौर पर हंगामा किया। उसे काबू करने की कोशिश के दौरान हुई झड़प में दो पुरुषों पर चाकू से हमला हुआ। पुलिस ने एक व्यक्ति को मौके से गिरफ्तार किया है और दोनों घायलों की चोटें गंभीर नहीं हैं। हमले की वजह और यह हेट क्राइम था या नहीं, इसकी जांच जारी है। घटना के बावजूद गुरुद्वारे में शादी समारोह तय समय पर आयोजित किया गया। सुबह 5 बजे के बाद गुरुद्वारे में मचा हड़कंप यह घटना एडमंटन के उत्तर-पूर्वी बाहरी इलाके में स्थित नानकसर गुरसिख गुरुद्वारा मंदिर में सुबह 5 बजे के कुछ समय बाद हुई। एडमंटन पुलिस सर्विस ने बताया कि 14 स्ट्रीट और हॉर्सहिल रोड के पास हुई घटना की सूचना

मिलने पर अधिकारियों ने मौके से एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। आपातकालीन सेवाओं ने दो घायलों का इलाज किया।

हमले के पीछे की वजह अभी साफ नहीं : पुलिस ने अभी तक हमले के पीछे की वजह का खुलासा नहीं किया है। यह भी स्पष्ट नहीं किया गया है कि मामले की जांच संभावित घृणा-प्रेरित अपराध यानी हेट क्राइम के तौर पर की जा रही है या नहीं।

शादी से पहले प्रार्थना में घुसा आरोपी : गुरुद्वारा प्रतिनिधि हरमीत सहगल ने बताया कि एक व्यक्ति गुरुद्वारे के अंदर आया और बाद में होने वाली शादी से पहले चल रही सुबह की प्रार्थना में बाधा डालने लगा। ग्लोबल न्यूज के मुताबिक, सहगल ने कहा, ÷वह अंदर आया और हंगामा करने लगा। हमारी सुबह की प्रार्थना बाधित हो गई। जो लोग प्रार्थना कर रहे थे, उन्होंने इस व्यक्ति को देखा। ऐसा लग रहा था कि वह यहां आने वाला कोई सामान्य श्रद्धालु नहीं था।

समझाने की कोशिश नाकाम, हाथापाई के बाद चाकूबाजी सहगल के मुताबिक, प्रार्थना करा रहे लोगों ने पहले उस व्यक्ति से बात कर उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने सहयोग नहीं किया। उन्होंने कहा, %वह व्यक्ति किसी की बात नहीं सुन रहा था। इसलिए उन्होंने उसे काबू करने की कोशिश की। उसने भी इसका विरोध किया।

झड़प में दो लोगों को चाकू मारा गया : इसी टकराव के दौरान दो लोगों पर चाकू से हमला किया गया। सहगल ने बताया कि हमले के बाद दोनों घायल होश में थे। उन्होंने कहा, आखिरी बार जब मैंने सुना, तब दोनों बात कर रहे थे। पुलिस के मुताबिक, दोनों घायलों की हालत गंभीर नहीं है और उनकी चोटें जानलेवा नहीं बताई गई हैं। सुबह हुई इस हिंसक घटना के बावजूद गुरुद्वारे में शादी समारोह को रद्द नहीं किया गया। समारोह सुबह करीब 10:30 बजे निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आयोजित किया गया। सहगल ने कहा कि राहत की बात यह रही कि गुरुद्वारे की संपत्ति को कोई खास नुकसान नहीं पहुंचा और विशेष रूप से सिख धर्मग्रंथ भी सुरक्षित रहे, जिन्हें समुदाय में बेहद पवित्र माना जाता है।

दिन-रात काम फिर भी नहीं पल रहा परिवार, क्या चीन के गिग वर्कर्स का सपना टूट रहा सरकार की नजरें टेढ़ी

यान जुआंग, एजेंसी। चीन में आर्थिक दबाव और कठिन कामकाजी हालात अब केवल आंकड़ों या रोजगार के सवाल तक सीमित नहीं रह गए हैं। इनका असर वहां के श्रमिकों की लिखी कविताओं और किताबों में भी दिखाई देने लगा है। फूड डिलीवरी बॉय, कूरियर कर्मचारी और फैक्ट्री मजदूर अपनी रोजमर्रा की परेशानियों, कम आमदनी और परिवार से दूरी को साहित्य के जरिए सामने ला रहे हैं। यह श्रम साहित्य चीन के मध्य वर्ग और युवाओं के बीच भी जगह बना रहा है। इसकी वजह यह है कि बहुत से लोगों को इन रचनाओं में अपनी जिंदगी की झलक दिखाई देती है। क्यों साहित्य में उतर रही है मजदूरों की मुश्किल जिंदगी फूड डिलीवरी

ड्राइवर रहे वांग जिबिंग की कविताएं चीन के श्रमिक जीवन की इसी तस्वीर को सामने रखती हैं। उनकी एक कविता में ऐसे डिलीवरी कर्मचारी की जिंदगी दिखाई गई है, जो दूसरे शहर में रहकर दिन-रात काम करता है। उसके लिए हर मिनट का मतलब एक और ऑर्डर पूरा करना है, लेकिन इतनी मेहनत के बाद भी परिवार की आर्थिक जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं। घर से दूर रहने के कारण वह अपने बच्चे से भी दूर होता जाता है। यह कहानी अकेले एक व्यक्ति की नहीं मानी जा रही, बल्कि चीन में काम कर रहे कई प्रवासी मजदूरों और गिग वर्कर्स की स्थिति को दिखाती है। ऐसे श्रमिक साहित्य में आर्थिक दबाव, थकान, अपमान और बेहतर जीवन की अधूरी उम्मीद जैसे विषय लगातार सामने आ रहे हैं। क्या गिग वर्कर्स और फैक्ट्री मजदूरों की आवाज अब दबाना मुश्किल हो रहा है चीन में कई मजदूर, डिलीवरी कर्मचारी और फैक्ट्री वर्कर अपनी वास्तविक जिंदगी को कहानियों और कविताओं में बदल रहे हैं। युवाओं में बेरोजगारी की ऊंची दर और बेहतर जीवन की उम्मीदों के कमजोर पड़ने से इस साहित्य की मांग बढ़ रही है। इन रचनाओं में वे कठिनाइयां सामने आती हैं, जिन्हें सरकारी नियंत्रण वाले मीडिया में बहुत कम जगह मिलती है। श्रमिक साहित्य के बढ़ते प्रभाव से चीन के अधिकारी भी इसके प्रति सतर्क बताए जा रहे हैं। इसकी खास वजह यह है कि ये रचनाएं किसी राजनीतिक भाषण की तरह नहीं, बल्कि सीधे उस व्यक्ति की जिंदगी से निकलती हैं जो रोज काम करता है, कमाता है और अपने परिवार को चलाने की कोशिश करता है। प्रवासी श्रमिक हू अनयान ने कूरियर कर्मचारी समेत 19 अलग-अलग तरह के काम किए हैं। उन्होंने लॉजिस्टिक्स कंपनी में छंटनी करने वाले कर्मचारी, सुरक्षा गार्ड और सुविधा स्टोर कर्मचारी जैसे काम भी किए।

भारत-नेपाल सीमा पर कैसे बना जालसाजी का नेटवर्क 500 यात्रा दस्तावेज गायब होने से खुला राज

काठमांडो, एजेंसी। नेपाल में 15 साल पहले विदेश मंत्रालय के स्टोर से गायब हुए 500 खाली यात्रा दस्तावेजों की दोबारा जांच ने भारत और नेपाल से जुड़े दस्तावेज जालसाजी के एक कथित नेटवर्क पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। जांच में आशंका जताई गई है कि इस नेटवर्क के जरिए विदेशी नागरिकों और शरणार्थियों के लिए जाली नेपाली नागरिकता प्रमाणपत्र तैयार किए जाते थे। इसके बाद इन्हीं प्रमाणपत्रों के आधार पर नेपाली पासपोर्ट और यात्रा दस्तावेज हासिल किए जाते थे। भारत-नेपाल की खुली सीमा और दोनों देशों के बीच वीजा-मुक्त आवाजाही को देखते हुए इस मामले का सुरक्षा पहलू भी महत्वपूर्ण हो गया है।

500 दस्तावेज गायब होने का मामला फिर क्यों खुला : नेपाल विदेश मंत्रालय से वर्ष 2009 में ए-026001 से ए-026500 श्रृंखला के 500 खाली यात्रा दस्तावेज गायब हुए थे। इनमें से अब तक केवल तीन दस्तावेज बरामद किए जा सके हैं। बाकी 497 दस्तावेजों का कोई पता नहीं चला है। मामले की दोबारा जांच नेपाल पुलिस के केंद्रीय जांच ब्यूरो यानी सीआईबी को सौंपी गई है। जांच के दौरान मंत्रालय के पूर्व अधिकारी बचराम केसी को गिरफ्तार किया गया है। उनके बयान को जांच में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। वरिष्ठ राजनयिकों के बयान भी दर्ज किए गए हैं। इतने वर्षों बाद दोबारा शुरू हुई जांच का मुख्य सवाल यही है कि इतने संवेदनशील दस्तावेज आखिर किसके हाथ लगे और उनका इस्तेमाल कहां किया गया।

जाली नागरिकता से असली पासपोर्ट तक कैसे पहुंचते थे : जांच में सामने आए आरोपों के अनुसार कथित सिंडिकेट भारत-नेपाल सीमा से लगे जिलों में सक्रिय था। नेटवर्क के सदस्य विदेशी नागरिकों या अवैध रूप से रह रहे लोगों के लिए जाली नेपाली नागरिकता प्रमाणपत्र तैयार करवाते थे। इसके बाद इसी पहचान के आधार पर नेपाली पासपोर्ट और दूसरे यात्रा दस्तावेज हासिल करने का रास्ता तैयार किया जाता था।

इस पूरी प्रक्रिया में दोनों देशों में मौजूद दलालों के समन्वित नेटवर्क की बात सामने आई है। गिरफ्तार पूर्व अधिकारी केसी के बयान के मुताबिक भारत और नेपाल में दलालों का एक संगठित तंत्र काम कर रहा था। हालांकि, इस नेटवर्क से जुड़े सभी आरोपों और इसकी पूरी संरचना की जांच अभी जारी है। जांच में कथित नेटवर्क के विदेशी नागरिकों से प्रति व्यक्ति करीब 5,000 अमेरिकी डॉलर वसूलने की बात सामने आई है। भारतीय मुद्रा में यह रकम करीब चार से सवा चार लाख रुपये के आसपास बैठती है। रिपोर्ट के अनुसार इस नेटवर्क में मुख्य रूप से अफगान और तिब्बती शरणार्थियों के शामिल होने की आशंका जताई गई है। साथ ही अफगानिस्तान से आए लोगों के इस जालसाजी नेटवर्क के जरिए आवाजाही करने की आशंका से भी इनकार नहीं किया गया है। जांच एजेंसी अब यह पता लगाने में जुटी है कि गायब हुए यात्रा दस्तावेजों में से कितने का इस्तेमाल किया गया और किन लोगों को इन दस्तावेजों के जरिए नेपाल की पहचान या यात्रा संबंधी कागजात हासिल हुए। भारत और नेपाल के बीच खुली सीमा होने के कारण इस मामले का असर केवल नेपाल तक सीमित नहीं माना जा रहा है।

अमेरिका में भारतीय खाना ट्रेंड में, पाकिस्तान में चाट और ढाका में साड़ी की मांग क्यों बढ़ी

न्यूयॉर्क/लाहौर/ढाका, एजेंसी। भारतीय खानपान और पहनावे का आकर्षण अब भारत की सीमाओं से बाहर भी साफ दिखाई दे रहा है। पाकिस्तान में दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे और मुगलई व्यंजन पसंद किए जा रहे हैं, जबकि ढाका की शादियों में बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियों की मांग बनी हुई है। अमेरिका में क्षेत्रीय भारतीय भोजन प्रमुख खानपान रुझानों में शामिल हुआ है। ऐसे में सवाल है कि क्या सांस्कृतिक पसंद राजनीतिक सीमाओं से ज्यादा मजबूत साबित हो रही है भारतीय संस्कृति का असर खानपान और पहनावे के जरिए दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में दिखाई दे रहा है। अमेरिका से लेकर पाकिस्तान और बांग्लादेश तक भारतीय व्यंजन और पारंपरिक परिधान लोगों की पसंद बन रहे हैं। पाकिस्तान के लाहौर और कराची में दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे, मुगलई व्यंजन और कोलकाता काठी रोल आकर्षण का केंद्र हैं। दूसरी तरफ ढाका में बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियां खासतौर पर शादियों में पसंद की जा रही हैं। यह स्थिति इसलिए दिलचस्प है क्योंकि राजनीतिक स्तर पर मतभेदों के बावजूद लोगों की सांस्कृतिक पसंद अलग दिशा में चलती दिखाई दे रही है।

अमेरिका में क्षेत्रीय भारतीय खाने की मांग क्यों बढ़ी : अमेरिका में भारतीय भोजन की तस्वीर पिछले कुछ समय में बदली है। भारतीय खाना पहले अक्सर सामान्य करी तक सीमित समझा जाता था, लेकिन अब अमेरिकी उपभोक्ताओं की दिलचस्पी भारत के अलग-अलग क्षेत्रों के व्यंजनों में बढ़ रही है। 2026 के खानपान रुझानों में क्षेत्रीय भारतीय व्यंजनों को शीर्ष पांच में जगह मिली है। अमेरिकी शहरों में भारतीय रेस्तराओं की खोज और बुकिंग में भी तेजी देखी गई है। अब ग्राहक केवल सामान्य भारतीय करी नहीं खोज रहे, बल्कि अलग-अलग इलाकों के खास स्वाद आजमाना चाहते हैं। केरल के नारियल, करी पत्ते, हींग और समुद्री भोजन जैसे स्वाद भी लोगों की पसंद में उभर रहे हैं। इससे भारतीय भोजन की

पहचान क्षेत्रीय विविधता के साथ और व्यापक होती दिखाई देती है।

लाहौर और कराची में दिल्ली के स्वाद की मांग क्यों बढ़ी : पाकिस्तान में भारतीय खानपान की लोकप्रियता खासतौर पर लाहौर और कराची में दिखाई दे रही है। दिल्ली की चाट, अमृतसरी कुलचे, मुगलई व्यंजन और कोलकाता काठी रोल वहां लोगों को आकर्षित कर रहे हैं। लाहौर का गवालमंडी और कराची के फूड स्ट्रीट्स भारतीय स्वाद के लिए खास चर्चा में हैं। सोशल मीडिया ने भी इस रुचि को बढ़ाने में भूमिका निभाई है। यूट्यूबर और व्लॉगर दिल्ली, अमृतसर, लखनऊ और दक्षिण भारत के व्यंजनों को अपने वीडियो के जरिए दर्शकों तक पहुंचा रहे हैं। भारतीय शहरों के नाम से जुड़े व्यंजन भी लोगों के बीच खास आकर्षण पैदा कर रहे हैं। इस तरह खानपान ने राजनीतिक सीमाओं से अलग अपनी जगह बनाई है।

ढाका की शादियों में भारतीय साड़ियों का रुतबा क्यों बढ़ा : बांग्लादेश की राजधानी ढाका में भारतीय साड़ियों का आकर्षण खास तौर पर शादी-ब्याह के मौकों पर नजर आता है। बनारसी, कांजीवरम और चंदेरी साड़ियों को वहां केवल पारंपरिक पहनावे के तौर पर नहीं देखा जा रहा, बल्कि इन्हें शादियों में स्टेटस और खास पसंद से भी जोड़ा जा रहा है। भारतीय खानपान की मांग भी वहां बनी हुई है। गुलशन और धानमंडी जैसे इलाकों में कोलकाता काठी रोल और पाव भाजी लोगों के पसंदीदा स्वादों में शामिल हैं। यानी भारत से जुड़े भोजन और पहनावे दोनों ने ढाका में अपनी अलग पहचान बनाई है। यह सांस्कृतिक जुड़ाव इस बात का उदाहरण है कि लोगों की पसंद कई बार देशों के राजनीतिक संबंधों से अलग अपना रास्ता तय करती है। भारतीय भोजन और परिधान की यह लोकप्रियता केवल बाजार की कहानी नहीं है। इसके पीछे संस्कृति, स्वाद और लोगों की व्यक्तिगत पसंद भी काम कर रही है। अमेरिका में भारतीय क्षेत्रीय व्यंजन नए फूड ट्रेंड का हिस्सा बन रहे हैं। पाकिस्तान में दिल्ली और अमृतसर के स्वाद लोगों को आकर्षित कर रहे हैं, जबकि ढाका की शादियों में भारतीय साड़ियों की मांग बनी हुई है। सोशल मीडिया ने इस प्रक्रिया को और तेज कर दिया है। लोग यूट्यूब और दूसरी ऑनलाइन सामग्री के जरिए दूसरे देशों के भोजन, कपड़े और परंपराओं से परिचित हो रहे हैं। इस पूरी तस्वीर से यह सवाल उठता है कि क्या सांस्कृतिक जुड़ाव राजनीतिक दूरी के बावजूद लोगों को करीब ला सकता है। दिल्ली की चाट से लेकर बनारसी साड़ी तक भारतीय संस्कृति का यह विस्तार कम से कम इतना जरूर दिखाता है कि स्वाद और फैशन की अपनी एक ऐसी दुनिया है।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी, 149 प्लोट 26 खोडीयारनगर, सिद्धिविनायक मंदीर के पास, भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

दिल्ली में स्वाइन फ्लू का प्रकोप, सरकार ने जारी की स्वास्थ्य एडवाइजरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय राजधानी में एच1एन1 (स्वाइन फ्लू) के बढ़ते मामलों के मद्देनजर दिल्ली सरकार ने नागरिकों के लिए एक विस्तृत स्वास्थ्य एडवाइजरी जारी की है। इस वर्ष अब तक 1,777 से अधिक एच1एन1 संक्रमणों सहित कुल 2,300 से अधिक इन्फ्लुएंजा-ए के मामले सामने आ चुके हैं, जिसके बाद प्रशासन ने लोगों से सतर्कता बरतने की अपील की है। एडवाइजरी में श्वसन संबंधी स्वच्छता अपनाने, भीड़भाड़ वाली जगहों से बचने और बुखार, खांसी, गले में खराश या सांस लेने में तकलीफ जैसे लक्षण दिखने पर तत्काल डॉक्टरी सलाह लेने का आग्रह किया गया है। लोगों को खांसते-छींकते समय मुंह ढकने, नियमित हाथ धोने, भीड़भाड़ में मास्क पहनने और बीमार लोगों से दूरी बनाए रखने की सलाह दी गई है। इसके साथ ही, आंखों-नाक को छूने से बचने, सार्वजनिक स्थानों पर न थूकने और पर्याप्त तरल पदार्थ लेने पर जोर दिया गया है। बिना डॉक्टरी सलाह के दवा लेने से बचने को भी कहा गया है। स्वास्थ्य विभाग ने इन्फ्लुएंजा से निपटने की पूरी तैयारी होने का दावा किया है, जिसमें अस्पतालों में पर्याप्त बिस्तर, दवाएं और मेडिकल उपकरण मौजूद हैं। 35 अस्पतालों को विशेष निगरानी में रखा गया है, जबकि एम्स और राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र को रेफरल प्रयोगशालाएं बनाया गया है। शुक्रवार तक दिल्ली में इन्फ्लुएंजा के कुल 2,602 मामले सामने आए हैं। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे. पी. नड्डा के साथ बैठक में तैयारियों की समीक्षा भी की।

गुजरात में नकली शराब से मौतों का सिलसिला, 15 की मौत

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के भावनगर जिले में जहरीली नकली शराब पीने से मौतों का सिलसिला थम नहीं रहा है। ताजा रिपोर्टों के मुताबिक मृतकों की संख्या बढ़कर 15 हो गई है। शनिवार को इलाज के दौरान तीन और लोगों की मौत हुई। इनमें भावनगर के दो मरीज और सूरत में भर्ती एक सुरक्षा जवान भी शामिल है। इस मामले में जहरीली शराब में मेथनॉल मिलाए जाने की बात सामने आई है। शराब को एक लोकप्रिय विदेशी शराब ब्रांड की नकली बोतलों में भरकर बेचने का आरोप है। पुलिस ने अब तक 21 आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर 13 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गुजरात पुलिस ने मध्य प्रदेश से मुख्य आरोपी रईस को गिरफ्तार किया है। ताजा जानकारी के अनुसार 17 लोग अभी अस्पतालों में भर्ती हैं, जिनमें तीन की हालत गंभीर है। वह आईसीयू में उपचाररत हैं। वहीं 17 मरीजों को इलाज के बाद अस्पताल से छुट्टी दी जा चुकी है। पुलिस को आशंका है कि इस जहरीली शराब के निर्माण में इस्तेमाल कच्चा माल मध्य प्रदेश और अहमदाबाद से लाया गया था। जांच में पूरे नेटवर्क का पता लगाने का प्रयास जारी है।

दिल्ली पुलिस के जवानों को लोगों ने लाठी-डंडों से पीटा, मिर्ची पाउडर भी डाला

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली पुलिस की कार्रवाई से नाराज कुछ लोगों ने जवानों पर लाठी-डंडों से अटैक कर दिया। आरोपियों ने मिर्च पाउडर भी जवानों पर फेंका। इस घटना का वीडियो भी सामने आया है, जिसमें स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है कि आरोपी किस तरह से कानून-व्यवस्था को अपने हाथों में लेते हुए पुलिस के जवानों पर निर्ममता से लाठियां बरसा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक आउटर नॉर्थ जिले के भलस्वा डेयरी इलाके में ड्यूटी के दौरान पुलिसकर्मियों पर हमला करने का मामला सामने आया है। आरोप है कि बाइक को दस्तावेज नहीं होने के कारण पुलिस द्वारा जब्त किए जाने से नाराज कुछ लोगों ने पुलिसकर्मियों की आंखों में मिर्ची पाउडर फेंका और ईंट-पत्थर व लाठी-डंडों से हमला कर दिया। पुलिस ने मौके से एक किशोर को पकड़ है, जबकि अन्य आरोपी फरार हैं।

सीएम का पुतला फूंकने की कोशिश में पुलिस से झड़प, 15 बीजेपी कार्यकर्ता हिरासत में

गिरिडीह (एजेंसी)। झारखंड के गिरिडीह में सीएम हेमंत सोरेन का पुतला फूंकने की कोशिश करते समय बीजेपी कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच झड़प हो गई। इसके बाद बीजेपी के 15 कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया गया। बीजेपी की नगर इकाई के अध्यक्ष के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं ने सीएम का पुतला लेकर जुलूस निकाला था। बीजेपी कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि पुलिस ने उनसे पुतला छीन लिया, जिसके बाद झड़प हुई। गिरिडीह के अनुमंडल दंडाधिकारी ने बताया कि 15 बीजेपी के लोगों को हिरासत में लिया गया है। बाद में कई लोगों ने गिरफ्तारी दी। बाद में छोड़ दिया। बाद में कुछ कार्यकर्ताओं ने सीएम की तस्वीर वाला एक अन्य पुतला टावर चौक के पास फूंक दिया। इस बीच हजारीबाग जिले में सैकड़ों छात्रों ने पुलिस के कथित लाठीचार्ज के विरोध में 'मौन जुलूस' निकाला। प्रदर्शन के दौरान छात्रों ने पुलिसकर्मियों को गुलाब के फूल दिए। एक प्रदर्शनकारी ने कहा कि गुलाब देने का उद्देश्य यह संदेश देना था कि पुलिस लाठीचार्ज करे या पानी की बौछार मारे, फिर भी हमारा प्रदर्शन जारी रहेगा।

एक देश एक चुनाव की कवायद तेज, इसी आम चुनाव में होगा लागू?

एक चुनाव के लिए 2034 की डेडलाइन घटाकर 2029 करने की तैयारी

नई दिल्ली, एजेंसी।

देशभर में लोकसभा और विधानसभा चुनाव साथ कराने को लेकर कवायद तेज हो गई है। एक रिपोर्ट के मुताबिक एक देश, एक चुनाव को लेकर बनाई गई संसद की संयुक्त समिति ने भी सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने इस बारे में सलाह लेनी शुरू कर दी है। रिपोर्ट में कहा गया है कि सरकार एक देश एक चुनाव के लिए 2034 की डेडलाइन को घटाकर 2029 ही करना चाहती है। यानी अगला लोकसभा चुनाव बिल्कुल अलग अंदाज में हो सकता है। इसके साथ ही विधानसभा के चुनाव भी करवाए जा सकते हैं। अगर ऐसा होता है तो एक साथ ही सभी राज्य की विधानसभाओं को भंग कर दिया जाएगा। इस महत्वाकांक्षी योजना का मुख्य उद्देश्य देश के चुनाव चक्र को सुव्यवस्थित करना, चुनावी खर्च को कम करना और बार-बार होने वाली आदर्श आचार संहिता के कारण विकास कार्यों में आने वाली बाधाओं को दूर करना है।

इस समय देश के 22 राज्यों में एनडीए की सरकार है। इनमें से 11 राज्यों में अगले दो सालों में विधानसभा का चुनाव होना है। चार ऐसे राज्य हैं जिनमें लोकसभा चुनाव के साथ ही चुनाव हो सकते हैं। इनमें आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और ओडिशा का नाम शामिल है। 2024 में एक देश एक चुनाव को लेकर जो कमेटी बनाई गई थी उसका टारगेट यही था कि 2034 में साथ में चुनाव कराने को लेकर रणनीति तैयार की जाए। अब सरकार इस प्रयास में है कि इसके लिए ज्यादा इंतजार ना किया जाए और इसे जल्द से जल्द लागू किया जाए। इसका मतलब यह है कि देश की चुनावी प्रणाली में एक बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है, जिससे राजनीतिक परिदृश्य भी प्रभावित होगा।

संयुक्त संसदीय समिति पिछले दो साल से अपने काम में लगी है और इस शीत सत्र में संसद में रिपोर्ट जमा कर सकती है। संविधान का अनुच्छेद 174 2, बी राज्यपाल को विधानसभा भंग करने का अधिकार देता है। ऐसे में अगर एक साथ चुनाव करवाने होंगे तो जनवरी में ही राज्यों की विधानसभा भंग कर दी जाएगी। जिन राज्यों में एनडीए की सरकार है वहां यह आसान होगा, क्योंकि मंत्रिपरिषद की सलाह पर ही राज्यपाल विधानसभा भंग कर सकते हैं। यह प्रक्रिया कई राज्यों में संवैधानिक और राजनीतिक चुनौतियां भी पैदा कर सकती है, खासकर उन राज्यों में जहां सरकार का कार्यकाल अभी पूरा नहीं हुआ है।

संसद का शीतकालीन सत्र आमतौर पर नवंबर के आखिरी हफ्ते में शुरू होता है और क्रिसमस से पहले संपन्न हो जाता है। यह 41 सदस्यीय समिति एक देश, एक चुनाव व्यवस्था को लागू करने के लिए संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024 पर विचार-विमर्श कर रही है। समिति 2029 तक, लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और स्थानीय निकायों के चुनाव एक साथ कराने के प्रस्ताव पर देश भर में परामर्श कर रही है। इस योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए कई संवैधानिक संशोधनों और व्यापक राजनीतिक सहमति की आवश्यकता होगी। बीजेपी के कुछ मुख्यमंत्रियों ने पहले ही लोकसभा चुनाव के साथ ही विधानसभा के चुनाव कराने की इच्छा जाहिर की है। गोवा, हरियाणा और उत्तराखंड के मुख्यमंत्रियों ने इसका समर्थन किया है। इसके साथ ही दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने भी 1 जुलाई को कमेटी के साथ बैठक की थी। यह पहल देश में शासन और चुनावी प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस : दिग्गजों ने सराहना कर वैज्ञानिकों को दी बधाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के अवसर पर देश भर के केंद्रीय मंत्रियों और कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भारत के वैज्ञानिकों को बधाई दी है। यह दिवस वर्ष 2023 में चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक सफलता की स्मृति में मनाया जाता है, जिसने पूरी दुनिया को भारत की अंतरिक्ष क्षमता का परिचय कराया था। यह उपलब्धि हमारे वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम और अदम्य संकल्प का परिणाम है, जिसने भारत को वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति के रूप में स्थापित किया है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने इस अवसर पर अपने संदेश में कहा, आज हम अंतरिक्ष में भारत की असाधारण यात्रा का सम्मान करते हैं, जिसमें शुरुआती मिशनों से लेकर चंद्रयान और उससे आगे के मिशन शामिल हैं। हमारे वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और इनोवेटर्स की प्रतिभा, लगन और साहस को सलाम। उनकी उपलब्धियां हर युवा भारतीय में जिज्ञासा जगाएं और अगली पीढ़ी को नई सीमाओं को खोजने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की प्रगति और भविष्य की संभावनाओं पर जोर दिया। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने कहा, भारत के समस्त वैज्ञानिकों को राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। वर्ष 2023 में आज ही के दिन देश के महान वैज्ञानिकों ने अपनी उत्कृष्ट शोध-क्षमता, असाधारण कौशल और अथक परिश्रम से चंद्रमा पर सफलतापूर्वक चंद्रयान-3 की सॉफ्ट लैंडिंग कराकर अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान रचा था। उन्होंने आगे लिखा, आज राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के अवसर पर हम सभी वैज्ञानिकों और उनकी टीम का अभिनंदन करते हैं, जिन्होंने स्वदेशी के सामर्थ्य से भारत को वैश्विक पटल पर एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति के रूप में स्थापित किया है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस की सभी वैज्ञानिकों और प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए लिखा, यह दिवस चंद्रमा से लेकर अंतरिक्ष की अनंत संभावनाओं तक भारत की साहसिक उड़ान, वैज्ञानिक सामर्थ्य और नवाचार की अद्भुत यात्रा का उत्सव है। प्रधानमंत्री के यशस्वी नेतृत्व में विज्ञान, अनुसंधान और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित करता नया भारत, विकसित भारत-आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को नई गति और वैश्विक पहचान प्रदान कर रहा है।

कांग्रेस हिंदू विरोधी नैरेटिव सेट करने की कोशिश कर रही: बीजेपी

-राहुल गांधी को धर्मग्रंथों को पॉलिटिकल नजरिए से नहीं देखना चाहिए

नई दिल्ली, एजेंसी।

राहुल गांधी ने पुणे में मनु-स्मृति को लेकर कहा था कि उसमें महिलाओं के अपमान को लेकर श्लोक लिखा है। उन्होंने कहा था कि मनु-स्मृति में महिलाओं को जीवन के हर चरण में पुरुष रिश्तेदारों के अधीन रहने की बात कही गई है। इस मामले पर बीजेपी ने कहा कि कांग्रेस हिंदू विरोधी नैरेटिव सेट करने की कोशिश कर रही है। बीजेपी के अमित मालवीय ने एक्स पोस्ट के जरिए कहा कि कांग्रेस की आधिकारिक पोस्ट इस बात का एक और उदाहरण है कि वह हिंदू-विरोधी नैरेटिव बनाने के लिए हिंदू धर्मग्रंथों को अपनी सुविधा के मुताबिक पेश करती है। हिंदुओं को यह बताने से पहले कि हिंदू धर्म महिलाओं के बारे में क्या कहता है, राहुल गांधी को पहले पूरी मनुस्मृति पढ़नी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर राहुल गांधी बहस करना चाहते हैं, तो उन्हें धर्मग्रंथों को ईमानदारी से पढ़ना चाहिए, न कि उन्हें पॉलिटिकल नजरिए से देखना चाहिए। भारत की सभ्यता को अंग्रेजी के चश्मे से संविधान समझने का दावा नहीं किया जा सकता। हिंदू धर्म को राहुल गांधी से सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है। वहीं निशिकांत दुबे ने एक्स पर लिखा- बहन प्रियंका गांधी आपसे ज्यादा समझदार हैं, अपनी गद्दी दे दीजिए। सिद्धांत और उपदेश अपने घर से नहीं, दूसरों पर लागू होता है।

दो देशों के रिश्ते को आगे बढ़ाने के लिए साझा हित जरूरी: जयशंकर

बांग्लादेश और पाकिस्तान को लेकर विदेश मंत्री की दो टूक

नई दिल्ली, एजेंसी।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत के उसके पड़ोसी देशों के साथ रिश्तों पर खुलकर बात की है। उन्होंने बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के बाद दोनों देशों के संबंधों को लेकर कहा कि किसी भी रिश्ते को आगे बढ़ाने के लिए साझा हित जरूरी होते हैं। वहीं, दूसरी ओर पाकिस्तान पर तंज कसते हुए जयशंकर ने कहा कि वह दुनिया का ऐसा अनोखा देश है, जो अपने पड़ोसी पर हमला करने के लिए सुनियोजित आतंकवाद का प्रयोग करता है। यह टिप्पणी भारत की विदेश नीति में पारदर्शिता और पड़ोसी देशों के प्रति उसके दृष्टिकोण को दर्शाती है।

एक फोरम में अपनी बात को रखते हुए विदेश मंत्री ने भारत की विदेश नीति पर भी चर्चा की। जब उनसे पूछा गया कि क्या भारत बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना को प्रत्यर्पित करने के बारे में सोच रहा है। इस सवाल का सीधा जवाब न देते हुए विदेश मंत्री ने कहा, मैं इतना कह सकता हूं कि किसी भी रिश्ते को आगे बढ़ने के लिए उसे पारस्परिक हित की कसौटी पर खरा उतरना होगा। यह हमारे लिए भी हितकारी होना चाहिए। इस बयान से स्पष्ट होता है कि भारत अपने कूटनीतिक संबंधों में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाता है और राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देता है। विदेश मंत्री की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान की बहुप्रतीक्षित भारत यात्रा को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है। सूत्रों के मुताबिक दोनों पक्ष अगले कुछ सप्ताह में इस यात्रा की संभावना तलाशने के लिए पर्दे के पीछे बातचीत जारी रखे हुए हैं। विदेश मंत्रालय ने इस महीने की शुरुआत में घोषणा की थी कि भारत ने रहमान को द्विपक्षीय यात्रा के साथ-साथ नई दिल्ली में होने वाले आगामी ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के संपर्क सत्र में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया है। पाकिस्तान को लेकर बात करते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि पाकिस्तान दुनिया का सबसे अनोखा देश है। जयशंकर ने कहा, वह इसलिए अनोखा है क्योंकि आज के दौर में ऐसा कोई दूसरा देश नहीं है, जो किसी अन्य पड़ोसी देश पर हमला करने और दबाव बनाने के लिए लगातार और इतने सुनियोजित तरीके से आतंकवाद का इस्तेमाल करता हो। पाकिस्तान द्वारा हाल ही में तुर्किए और सऊदी अरब के साथ किए गए मक्का समझौते पर भी अपनी राय का संकेत दिया। उन्होंने कहा कि पश्चिम एशिया में अभी युद्ध के हालात हैं। ऐसे में इस समझौते का कहां है। वहीं, पाकिस्तान और अमेरिका के संबंधों का जिक्र करते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि दोनों देशों के बीच संबंधों का लंबा इतिहास रहा है। उन्होंने कहा, अब काफी हद तक हमने अमेरिका के साथ अपने संबंध खुद विकसित किए हैं, लेकिन यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि पाकिस्तान सिर्फ इसलिए अनोखा नहीं है कि वह भारत का पड़ोसी है। हमारे अन्य पड़ोसी भी हैं। ऐसे दूसरे देश भी हैं, जिनके बीच मतभेद हैं।

वंदे मातरम् पर कांग्रेस केवल दो छंदों पर कायम: शशि थरूर

मायावती ने समाजवादी पार्टी पर लगाए कई आरोप, कहा-माफी मांगे अखिलेश

नई दिल्ली, एजेंसी।

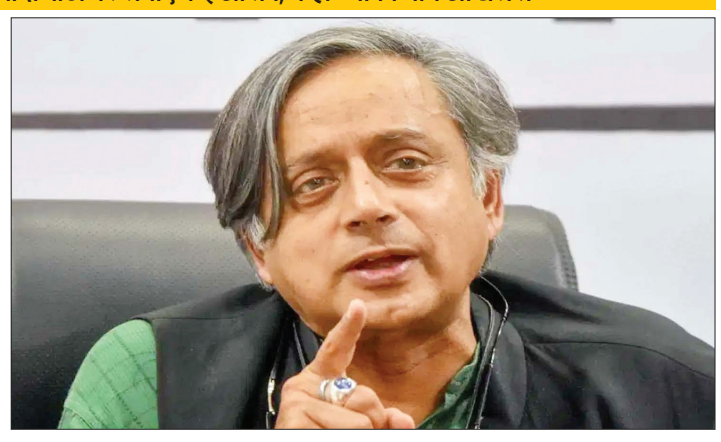

देश में वंदे मातरम् को लेकर जारी विवाद के बीच कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने अपनी पार्टी का रुख स्पष्ट किया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि कांग्रेस पार्टी 1937 के अधिवेशन में पारित प्रस्ताव के तहत अपने कार्यक्रमों में वंदे मातरम् के केवल दो छंदों का ही प्रयोग करती रही है। थरूर ने स्पष्ट किया कि इसे लेकर कोई विवाद नहीं होना चाहिए। हालांकि, उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि यदि किसी राष्ट्रीय या सरकारी कार्यक्रम में पूरा वंदे मातरम् बजाया जाता है, तो सभी सम्मानपूर्वक खड़े होकर उसका सम्मान करेंगे।

थरूर ने एक बातचीत में देश में जारी इस विवाद पर कांग्रेस की स्थिति को बिल्कुल साफ बताया। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि इस मुद्दे पर कांग्रेस पार्टी की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट है। कांग्रेस पार्टी अपने कार्यक्रमों में परंपरा का ही पालन कर रही है। मेरा मानना है कि अगर कोई राष्ट्रीय या सरकारी कार्यक्रम होता है, तो हम सभी इस दौरान खड़े रहेंगे। उन्होंने यह भी जोड़ा कि पार्टी वंदे मातरम् को लेकर अपने 1937 वाले फैसले पर ही कायम है। उनके अनुसार, कांग्रेस 1937 से लेकर अब तक अपने कार्यक्रमों में राष्ट्रगान का सिर्फ एक पद और वंदे मातरम् के दो पद ही बजाती रही है, और उनका रुख यही बना हुआ है।

भाजपा लगातार वंदे मातरम् को पूरा न गाए जाने को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधती आ रही है। इस विवाद ने तब और जोर पकड़ लिया, जब स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कांग्रेस कार्यालय में वंदे मातरम् बजाए जाने के दौरान सोनिया गांधी और राहुल गांधी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। भाजपा ने इस वीडियो को लेकर कांग्रेस पर जमकर हमला बोला और पार्टी की नई कार्यकारिणी ने इस मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर उठाने के लिए एक अभियान का भी ऐलान किया है।भाजपा ने वंदे मातरम् के महत्व को आगे बढ़ाने के लिए एक 10-सूत्रीय अभियान की घोषणा की है। पार्टी ने संकल्प लिया है कि वह देश की जनता के सामने जाकर वंदे मातरम् के महत्व को उजागर करेगी। वह यह बताएगी कि कैसे महात्मा गांधी ने वंदे मातरम् को साम्राज्यवाद-विरोधी नारा और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत बताया था। इसके साथ ही, भाजपा कांग्रेस की उस मानसिकता का भी जिक्र करेगी, जो कथित तौर पर केवल सांप्रदायिक दबाव और राजनीतिक तुष्टीकरण के लिए इसे गाने से इनकार करती है।

स्कूल निरीक्षण विवाद पर आशुतोष समेत 60 पर एफआईआर

-सीजेपी नेता रेखा ने भी की मारपीट तोड़फोड़ की शिकायत, दोनों पक्षों पर क्रॉस केस

जयपुर, एजेंसी।

जयपुर ग्रामीण के रामपुरा कंवरपुरा गांव के सरकारी स्कूल के निरीक्षण को लेकर हुआ विवाद अब कानूनी मोड़ ले चुका है। स्कूल निरीक्षण में गांव वालों और कॉंकरोच जनता पार्टी के नेताओं-कार्यकर्ताओं के बीच हुए विवाद के मामले में दोनों पक्षों की ओर से क्रॉस एफआईआर दर्ज हुई है। एक मामले में सीजेपी प्रवक्ता आशुतोष रांका समेत 50 से 60 अन्य लोगों के खिलाफ मारपीट, जानलेवा हमले, गाली-गलौज और जातिसूचक शब्दों के इस्तेमाल के आरोप में एससी-एसटी एक्ट के तहत भी मुकदमा दर्ज किया गया है। वहीं सीजेपी नेता रेखा शर्मा की शिकायत पर गांव के लोगों के खिलाफ मारपीट, पथराव और वाहनों के शीशे तोड़ने समेत कई आरोपों में एफआईआर दर्ज की गई है। बता दें रामपुरा कंवरपुरा गांव के सरकारी स्कूल के निरीक्षण के लिए 21 अगस्त को सीजेपी की टीम पहुंची थी। इसी दौरान गांव वालों के साथ विवाद और मारपीट का आरोप सामने आया। मामले में गांव के दलित युवक भगवान सहाय धानका की ओर से दी गई शिकायत के आधार पर जयपुर के शिवदासपुरा थाने में सीजेपी प्रवक्ता आशुतोष रांका और 50 से 60 अन्य लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। शिकायत में आरोप लगाया कि आशुतोष रांका और सीजेपी लोग गांव में आए और वहां हंगामा किया। आरोप है कि इस दौरान महिलाओं और पुरुषों के साथ गाली-गलौज की गई और उनके साथ मारपीट की गई। शिकायत में जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल करने का आरोप भी लगाया गया है। दूसरी तरफ सीजेपी नेता रेखा शर्मा की तहरीर पर भी रामपुरा कंवरपुरा गांव के लोगों के खिलाफ क्रिमिनल केस दर्ज किया गया है। रेखा की शिकायत में कहा गया है कि सीजेपी की टीम स्कूल ठीक करो मुहिम के तहत रामपुरा कंवरपुरा गांव में भैंसों के तबेले में चलने वाले सरकारी स्कूल का निरीक्षण करने जा रही थी। टीम के स्कूल तक पहुंचने से पहले ही कुछ अराजक तत्वों ने उन्हें घेर लिया। उनके साथ जमकर मारपीट की गई। इस दौरान पथराव करने और गाड़ियों के शीशे तोड़े गए हैं।इस पूरे मामले में दोनों पक्षों की ओर से एफआईआर दर्ज होने के बाद अब कई सवाल भी खड़े हो रहे हैं। सीजेपी की तरफ से आरोप लगाया जा रहा है कि पूरे घटनाक्रम के वीडियो फुटेज मौजूद हैं और उनसे साफ है कि हमला गांव के लोगों ने किया था। उनके कार्यकर्ताओं की मारपीट की कोई तस्वीर सामने नहीं आई है। पार्टी का आरोप है कि उसके खिलाफ दर्ज की गई क्रॉस एफआईआर सिर्फ मामले को कमजोर करने के लिए दर्ज कराई गई है। अब पूरे मामले में पुलिस की जांच अहम होगी। दोनों पक्षों के आरोपों, मौके के वीडियो फुटेज, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और अन्य साक्ष्यों की जांच के बाद ही यह साफ हो सकेगा कि रामपुरा कंवरपुरा गांव में स्कूल निरीक्षण के दौरान घटनाक्रम किस तरह हुआ और दोनों पक्षों की शिकायतों में लगाए गए आरोप कितने सही हैं।

भारत में हाफिज सईद के खिलाफ चलेगा मुकदमा, उधर पाक ने कर दिया कैद

नई दिल्ली, एजेंसी।

मुंबई में हुए 26/11 आतंकी हमले के मुख्य साजिशकर्ता और वैश्विक आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के संस्थापक हाफिज सईद की सुरक्षा पाकिस्तान में बेहद कड़ी कर दी गई है। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब भारत में उसके खिलाफ मुकदमा शुरू हो रहा है, जिसमें उसकी गैरमौजूदगी में सुनवाई चलेगी। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के खुफिया आकलन बताते हैं कि सईद पर खतरे की आशंका काफी बढ़ गई है, जिसके बाद पाकिस्तान की इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) ने उसकी सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया है। रिपोर्टों के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में सईद को निशाना बनाने की कई कोशिशें हुई हैं, जिनमें उसके कई करीबी सहयोगी भी मारे जा चुके हैं। इसी आशंका के चलते पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों को लगता है कि अब सईद खुद एक बड़ा निशाना बन सकता है।

पाकिस्तान के एक खुफिया अधिकारी के हवाले से बताया गया है कि हालिया सुरक्षा समीक्षा के बाद सईद के आसपास तैनात सुरक्षाकर्मियों की संख्या बढ़ा दी गई है। लश्कर-ए-तैयबा के जिन सदस्यों को उससे मिलने की इजाजत है, उन्हें भी कड़ी सुरक्षा जांच और स्क्रीनिंग से गुजरना पड़ता है। हाल के महीनों में सईद को लेकर खतरे की धारणा काफी बढ़ी है, जिसके चलते उसकी आवाजाही पर भी सख्त पाबंदी लगा दी गई है। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि ऑपरेशन सिंदूर और सईद को निशाना बनाने की कथित कोशिशों के बाद आईएसआई ने उसे बाहर निकलने से पूरी तरह रोक दिया है।इस पाबंदी का असर लश्कर-ए-तैयबा के संगठनात्मक कार्यक्रमों पर भी पड़ा है। पहले हाफिज सईद आतंकी संगठन के प्रशिक्षण और कट्टरता फैलाने वाले शिविरों में जाकर कैडर को संबोधित करता था, लेकिन अब कथित तौर पर उसे इन जगहों पर जाने की अनुमति नहीं है। उसकी वास्तविक लोकेशन को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। पाकिस्तान का आधिकारिक रुख है कि सईद 2019 से लाहौर की कोट लखपत जेल में बंद है। हालांकि, भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के आकलन के अनुसार, वह वास्तव में लाहौर के मोहल्ला जौहर इलाके में एक किलेबंद सेफ हाउस में रखा गया है। खतरे का स्तर बढ़ने पर उसे कथित तौर पर लाहौर के मियां मीर कैंटोनमेंट इलाके में स्थित एक और बेहद सुरक्षित ठिकाने पर ले जाया जाता है। यदि यह आकलन सही है, तो सईद की वास्तविक स्थिति को लेकर पाकिस्तान के आधिकारिक दावों पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगते हैं। यह उसकी गिरफ्तारी और जेल में होने के पाकिस्तानी दावों को खोखला साबित करता है। सईद की सुरक्षा ऐसे समय में बढ़ाई गई है जब रिपोर्टों के मुताबिक लश्कर-ए-तैयबा अपने नेटवर्क को फिर से मजबूत करने की कोशिश कर रहा है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान लश्कर के प्रमुख ठिकानों में शामिल मुरीदके का प्रशिक्षण केंद्र भी निशाना बना था, जिससे संगठन को बड़ा झटका लगा था। इसके बाद पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में संगठन की बैठकों और प्रशिक्षण शिविरों की गतिविधियां फिर से शुरू होने की बात सामने आई है।